अध्याय–4
अपूर्ण अभिलेखों के खाते
(Accounts from incomplete Records)

सीखने के उद्वेश्य (Learning Objective)

इस अध्याय को पढ़ने के पश्चात् आप जान पायेंगे कि –

1. अपूर्ण लेखो का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताऐं।
2. प्रारम्भिक पूॅजी एवं अन्तिम पूँजीं की सहायता से लाभ–हानि ज्ञात करना।
3. स्थिति–पत्रक एवं चिट्ठे में अन्तर।
4. अपूर्ण लेखो की अज्ञात मदोको विभिन्न खातों की सहायता से ज्ञात करना।
5. अपूर्ण लेखो से व्यापारिक खाता, लाभ–हानि खाता एवं चिट्ठा (स्थिति–विवरण) तैयार करना।
6. अपूर्ण लेखा पद्वति एवं दोहरा लेखा पद्वति में अन्तर।

अपूर्ण लेखों का अर्थ (Meaning of Incomplete Records) : दोहरा लेखा पद्वति में प्रत्येक लेन–देन की दोहरी प्रविष्टि की जाती है । प्रविष्टि में एक खाते के नाम में और दूसरे खाते के जमा पक्ष में समान राशि लिखी जाती है। व्यापारिक सौदों को पुस्तकों में लिखने की पूर्ण, सर्वोत्तम एवं वैज्ञानिक विधि दोहरा लेखा पद्वति है। अपूर्ण लेखा पद्वति में प्रत्येक लेन–देन की दोहरी प्रविष्टि नहीं की जाती है। इस पद्वति के अनुसार बहीखाते रखने वाले व्यापारी खाता बही में केवल व्यक्तिगत खाते ही रखते है। खाताबही में वस्तुगत एवं नाम–मात्र के खाते नहीं खोले जाते है। खाताबही में केवल एक ही श्रेणी के खाते खोले जाने के कारण ही इस पद्वति का नाम इकहरी लेखा पद्वति हुआ।

अपूर्ण लेखों से तात्पर्य ऐसे लेखों से है जो पूर्ण रूप से दोहरा लेखा प्रणाली पर आधारित नहीं होते हैं। यह हमेशा अपूर्ण द्वि प्रविष्टि है जो परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रहती हे। इसे बहुत छोटे व्यापारी, जैसे एक दूध बेचनेवाला, पान बेचने वाला, ढेला चलाने वाला, खोमचे वाला, सब्जी बेचने वाला आदि अपनाते है जिनका व्यापार छोटा होता है। वे न तो लेखापाल नियुक्त कर सकते है और न ही हिसाब–किताब रखते है। ये व्यापारी अपनी सुविधानुसार आवश्यक स्मरणार्थ हिसाब ही रखते है जो दोहरा लेखा पद्वति पर आधारित न होने के कारण अपूर्ण लेखे कहलाते है।

अपूर्ण लेखा पद्वति की परिभाषा (Definition of Incomplete Record System):

विभिन्न विद्वानो द्वारा अपूर्ण लेखा प्रणाली की निम्नलिखित परिभाषाएॅ दी गई है–
पुस्तपालन की वह प्रणाली जिसमें नियमानुसार केवल रोकड़ तथा व्यक्तिगत खातों का लेखा रखा जाता हैं, यह सर्वदा अपूर्ण दोहरा लेखा प्रणाली है जो प्रणाली स्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

– ई.एल.कोहलर :

'इकहरी लेखा प्रणाली लेन–देनों का लेखा करने की एक ऐसी पद्वति अथवा पद्वतियों का मिश्रण है जिसमें किसी लेन–देन के दोनों पहलुओं का लेखा नहीं किया जाता, फलस्वरूप यह पद्वति व्यवसायी को ऐसी आवश्यक सूचनायें उपलब्ध नही करा पाती, जिनसें वह अपने व्यवसाय की स्थिति जान सके। **– कार्टर**

सामान्य अर्थ में यह कह सकते है कि अपूर्ण लेखा प्रणाली में केवल रोकड़ बही बनाई जाती है तथा खाता बही में व्यक्तिगत खाते ही खोले जाते है। यह अलग से कोई प्रणाली नहीं होकर दोहरा लेखा प्रणाली का ही अपूर्ण रूप है।

अपूर्ण लेखों की वि□ाषताएं (Characteristics of Incomplete Records)

अपूर्ण लेखों की निम्नलिखित विशेषताएं है :–

1. **रोकड़ी व्यवहारों का लेखा** :– इसमें रोकड़ बही ही मुख्य बही होती है ओर इस बही से आय–व्यय, क्रय–विक्रय, सम्पत्ति–दायित्व से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त होती है क्योकि इनके पृथक से खाते नहीं खोले जाते।

2. **खाताबही में व्यक्तिगत खाते खोलना** :– वास्तविक एवं नाम–मात्र के खाते नहीं खोलकर केवल व्यक्तिगत खाते ही खोले जाते हैं।
3. **परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन** :– दोहरा लेखा पद्वति की तरह इसके कोई निश्चित नियम एवं सिद्वान्त नहीं होते है। इस पद्वति में एक संस्था से दूसरी संस्था में परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होता रहता है।
4. **पूर्ण सूचनाओं का अभाव** :– इसमे प्रत्येक सौदो की जानकारी के लिये व्यापारी को मूल बीजकों पर निर्भर रहना पड़ता है। उदाहरण के लिए यदि उधार क्रय ज्ञात करना हो तो क्रय किये गये माल के सभी बीजकों का योग लगाना पड़ेगा। सूचनाऐं तैयार रूप से उपलब्ध नहीं होती हैं।
5. **सरल एवं मितव्ययी** :– यह पद्वति छोटे व्यापारियों के लिये सरल व मितव्ययी होने के कारण उपयुक्त है। कम्पनीयां इसे वैद्यानिक रूप से नहीं अपना सकती।
6. **अन्तिम खाते बनाना कठिन** :– इस पद्वति में गणितीय शुद्वता की जाँच सम्पूर्ण रूप से खाताबही नहीं बनाने के कारण तलपट द्वारा नहीं की जा सकती है। वास्तविक एवं नाम–मात्र के खाते न रखने के कारण अन्तिम खाते बनाने में कठिनाई आती है।

अपूर्णता के कारण (Reasons for Incompletion)

1. **सीमित साधन** :– छोटे व्यापारियो का व्यापार छोटा होने के कारण साधानो का अभाव रहता है। यह अपने व्यापार में दोहरा लेखा प्रणाली के आधार पर लेखे रखने के लिये प्रशिक्षित व्यक्तियों की नियुक्ति नहीं कर सकते है। अतः व्यापारी स्वंय या कम वेतन पर कर्मचारी नियुक्त कर इस प्रकार के लेखे रख सकता है।
2. **ज्ञान का अभाव** :– छोटे व्यापारियों को दोहरा लेखा प्रणाली का ज्ञान नहीं होता है तथा साधनों के अभाव में वे अपने व्यापार में पूर्ण लेखे नहीं रख पाते है ।
3. **आकस्मिक घटना के कारण** :– यदि व्यापार में आग लगने, भूकम्प आने या बाढ़ आ जाने के कारण लेखा करने के आवश्यक प्रमाण नष्ट हो जाने की स्थिति में लेखे अपूर्ण रह जाते है।
4. **व्यवसाय की आर्थिक स्थिति छिपाने के लिये** :– एक चालाक व्यापारी अपने व्यवसाय की आर्थिक स्थिति अन्य व्यवसायी, कर अधिकारी, लेनदारों व प्रतिस्पद्धियों से छिपाने हेतु अपूर्ण लेखा विधि पर लेखा पुस्तकें रखता है।

अपूर्ण लेखा विधि के दोष (Demerits of Incomplete System)

1. **अवैज्ञानिक** :– प्रत्येक व्यवहार का नाम तथा जमा मे लेखा नहीं होने के कारण इसे अवैज्ञानिक माना गया है।
2. **शुद्वता का अभाव**:– इस पद्वति में तलपट बनाकर खतौनी की गणितीय शुद्वता की जॉच नहीं की जा सकती है।
3. **मूल्यांकन अंसम्भव** :– व्यापार विक्रय की दशा मे सही विक्रय मूल्य ज्ञात करने तथा ख्याति का मूल्यांकन करने में कठिनाई होती हे। क्योकि बिना उचित लेंखाकन के क्रेता को विश्वास नही होता हे।
4. **गबन की सम्भावना** :– उचित लेखांकन के अभाव में चालु एवं स्थायी सम्पत्तियो का कर्मचारियो द्वारा गबन भी कर लिया जाय तो पता लगाना कठिन होता है।
5. **तुलनात्मक अध्ययन का अभाव** :– अपूर्ण लेखा प्रणाली में उचित लेंखांकन न होने से तुलनात्मक अध्ययन करके व्यापारिक कमियों का पता लगाकर लाभो में वृद्वि का प्रयास नहीं किया जा सकता है।
6. **सम्पत्तियों में प्रतिस्थापन की व्यवस्था नही** :– इकहरी लेखा पद्वति में ह्रास तथा प्रतिस्थापन सम्बन्धी लेखांकन की उचित व्यवस्था न होने के कारण जब पुरानी स्थायी सम्पत्ति बैकार हो जाय तो प्रतिस्थापन में तकलीफ आती है।
7. **मान्यता का अभाव :–** अपूर्ण लेखा प्रणाली द्वारा प्रदर्शित लाभ तथा आर्थिक स्थिति सरकारी कार्यालयो (आयकर आदि), न्यायालयो तथा वित्तीय संस्थाओं के द्वारा (ऋण प्रदान करते समय) मान्य नहीं होते क्योकि इनका अंकेक्षण नही हो सकता है।
8. **अंतिम खाते बनाने मे कठिनाई :–** इसमें सभी व्यवहारों का लेखा दोहरा लेखा प्रणाली के सिद्धान्तों के अनुसार न होने के कारण अंतिम खाते अनुमान के आधार पर बनाये जाते है जिनके लिये आवश्यक सूचनाऐं ज्ञात करना बहुत कठिन होता है।
9. **शुद्व लाभ हानि की गणना असंम्भव** :– इस विधि में व्यापार द्वारा अर्जित सही लाभ या उठायी गई हानि की गणना असंम्भव होती है क्योकि प्राप्त सूचनाऐं अनुमान के आधार पर ज्ञात की जाती है।
10. **महत्वपूर्ण सूचनाओं का अभाव :–** इस पद्वति में सभी आवश्यक सूचनाऐं समय पर प्राप्त नहीं हो सकती है और आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में बाजार में टिक सकने के लिए समय पर आवश्यक सूचनाऐं प्रबन्धकों को बताना आवश्यक होता है।

लेखा प्रविष्टियां और उनकी खतौनी (Accounting entries and their posting)

किसी व्यापार गृह में होने वाले विभिन्न व्यवहारों को इस पद्वति के अन्तर्गत लेखांकित करने की दृष्टि से निम्नलिखित तीन श्रेणीयो में विभिक्त किया जा सकता है :

i. ऐसे व्यवहार जिनकी पूर्ण दो प्रविष्टियाँ कर दी जाती है (Transactions for which two complete enteries have been passed): इस श्रेणी में प्राय ऐसे सभी व्यवहार आ जाते हैं जिनमें एक तो व्यक्तिगत खाता तथा दूसरा रोकड़ खाता प्रभावित होता हो। जैसे देनदारों से नकद भुगतान प्राप्त हुआ हों अथवा लेनदारों को नकद भुगतान किया गया हो आदि। इन व्यवहारों की रोकड़ की प्रविष्टि पहले रोकड़ बही में की जाती है तथा रोकड़ बही से इनकी खतौनी सम्बन्धित खातों में कर दी जाती है। फलस्वरूप इन व्यवहारो की स्वतः दोहरी प्रविष्टि पूर्ण हो जाती है।

इन व्यापारिक व्यवहारो (Trading Transactions) के अतिरिक्त कुछ अन्य वित्तिय लेनदेनों की भी दोहरी प्रविष्टियां हो जाती है क्योकि राशि उधार देते समय अथावा प्राप्त करते समय पहले रोकड़ बही में प्रविष्टि की जाती है इसके पश्चात् रोकड़ बही से सम्बन्धित खातो मे इनकी खतौनी कर दी जाती है। इस प्रकार अपूर्ण लेखा प्रणाली में भी इस श्रेणी के व्यवहारो की दोहरी प्रविष्टियां पूरी हो जाती है।

ii. ऐसे व्यवहार जिनकी केवल एक ही प्रविष्टि की जाती है (Transactions having only one entry): अपूर्ण लेखा पद्वति में अधिकांश व्यवहार इस श्रेणी में रखे जा सकते है। अपूर्ण लेखा प्रणालीं से बहियां रखने वाले व्यापारी प्रायः रोकड़ बही और व्यक्तिगत खाते ही तैयार करते है। अतः सभी बाहरी पक्षों के साथ किये गये रोकड़ी लेनदेनों को छोड़कर शेष सभी व्यवहारो की एक प्रविष्टि ही हो पाती है। निम्नलिखित व्यवहार रोकड़ बही में लिखे जाते है परन्तु इनके खाते नहीं खोले जाते जैसे–

(अ) आय की नकद प्राप्ति, माल की नकद बिक्री, सम्पत्तियो की रोकड़ बिक्री।

(ब) व्ययो का नकद भुगतान, माल का नकद क्रय, सम्पत्तियो का रोकड़ क्रय।

उधार के व्यवहार संम्बन्धित पक्षों के खातों में सीधे लिख दिये जाते है क्योकि व्यक्तिगत खातो के अतिरिक्त अन्य कोई खाता खाताबही में नही खोला जाता है इसलिये इनकी भी दूसरी प्रविष्टि नही हो पाती। जैसे :–

(अ) प्राप्य आय, माल तथा सम्पत्तियो के उधार विक्रय के व्यवहारो की व्यक्तियो के खातो में नाम की ओर प्रविष्टि कर दी जाती है, परन्तु सम्बन्धित आय, विक्रय व सम्पत्ति खाते नहीं खोले जाते।

(ब) अदत्त व्यय, माल तथा सम्पत्तियो के उधार क्रय के व्यवहारो की सम्बन्धित व्यक्तियो के खातों मे तो जमा की ओर प्रविष्टि कर दी जाती है लेकिन सम्बन्धित व्यय, क्रय तथा सम्पत्ति खाते नही खोले जाते।

iii. ऐसे व्यवहार जिनकी कोई प्रविष्टि नही की जाती है (Transactions for which no entry have been passed): इस श्रेणी में केवल लेखा संम्बन्धी समायोजन के व्यवहार आते है। जैसे – सम्पत्तियो पर ह्रास, रहतिया, पूर्व दत्त व्यय जो वसूल न किये जा सके, अग्रिम प्राप्त आय जिसे लौटाने का दायित्व न हो तथा विभिन्न प्रावधान एव संचय आदि। इस श्रेणी के व्यवहारो से सम्बन्धित किसी पक्ष का खाता नही खोला जाता अतः इनकी एक भी प्रविष्टि नही हो पाती। कुछ लोग अदत्त व्यय तथा उपार्जिति आय के लिये भी प्रविष्टियाँ नही करते तथा इन व्यवहारो को भी इसी श्रेणी में रखना पसन्द करते है।

इस प्रकार इस पद्वति में कुछ लेनदेनो की दो प्रविष्टिया, कुछ लेनदेनो की एक ही प्रविष्टि की जाती है तथा कुछ लेनदेनो की दो प्रविष्टि नही की जाती। इसलिए इस पद्वति को इकहरी लेखा पद्वति के स्थान पर अपूर्ण लेखा प्रणाली (Incomplete Book keeping) भी कहते है।

इकहरी लेखा पद्वति मे व्यापार के परिणाम ज्ञात करना
(Ascertainment of Business results under Single Entry System)

व्यापार के लेखे चाहे इकहरी लेखा पद्वति के अनुसार रखे जाये अथवा अन्य किसी पद्वति से व्यापारिक अवधि के अन्त में लाभ–हानि ज्ञात करना आवश्यक हो जाता है इसके लिये लेखा अवधि के अन्त का स्थिति पत्रक (Statement of Affairs) बनाया जाता है। स्थिति पत्रक का स्वरूप स्थिति–विवरण (Balance Sheet) जैसा ही दिखाई देता है परन्तु स्थिति विवरण व्यापार की लेखा पुस्तको से बनाया जाता है जबकि स्थिति पत्रक केवल अनुमान से ही तैयार किया जाता है क्योकि इसमे नियमानुसार बहियॉ नही रखी जाती है। स्थिति विवरण की ही भांति स्थिति पत्रक के भी दो प़क्ष होते है। सम्पत्ति तथा दायित्व पक्षों मे सम्मिलित की जाने वाली विभिन्न मदों की राशियां निम्नलिखित प्रक्रिया द्वारा ज्ञात की जाती है–

i. रोकड़ बाकी (Cash in Hand): यदि रोकड़ बही रखी गई हो तो इसके शेष का मिलान तिजोरी में अवशिष्ट रोकड़ राशि से किया जाता है अन्यथा तिजोरी में बची हुई राशि ही हस्तस्थ रोकड़ मानी जाती है।

ii. बैक बाकी (Balance at Bank): यदि त्रिस्तम्भीय रोकड़ बही नियमानुसार रखी गई हो तो इसका नाम अथवा जमा का शेष क्रमशः बैंक शेष अथवा बैंक अधिविकर्ष माने जा सकते है। त्रिस्तम्भीय रोकड़ बही के अभाव में बैक पास बुक को देखकर बैंक शेष अथवा बैंक अधिविकर्ष स्थिति पत्रक में सम्मिलिति किया जा सकते है।

iii. विविध लेनदार तथा देनदार (Sundry Creditors and Debtors): चाहे अन्य कोई बही रखी जाय अथवा नही परन्तु व्यक्तिगत खातो को पूर्णतया लिखना छोटे से छोटे व्यपारी भी आवश्यक समझते है। अतः वर्ष के अन्त में कुल लेनदार तथा कुल देनदार ज्ञात करने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

iv. प्राप्य बिल तथा देय बिल (Bill Receivable and Bills Payable): वर्ष के अन्त में व्यापारी के पास जितने प्राप्य बिल पड़े हो उनकी राशि प्राप्य बिल मानी जाती है तथा स्मरण शक्ति के आधार पर जितनी स्वीकृतियां दी गई हो तथा उनके भुगतान न किये गये हो, उतने देय बिल स्थिति पत्रक में सम्मिलित कर दिये जाते है।

v. स्थायी सम्पत्तियां (Fixed Assets): यदि पिछले वर्ष का स्थिति–पत्रक बना हुआ हो तो उसमें लिखित सम्पत्तियों में इस वर्ष क्रय की गई सम्पत्तियां जोड़ दी जाती है तथा इस वर्ष बेची गई सम्पत्तियों का मूल्य घटा दिया जाता है। अवशिष्ट राशि में से अनुमानित ह्रास घटाने पर स्थायी सम्पत्तियों का मूल्य ज्ञात हो जाता है जिसे स्थिति पत्रक में सम्पत्ति पक्ष की ओर लिख दिया जाता है।
यदि गत वर्ष का स्थिति पत्रक न हो तथा इस वर्ष ही सम्पत्तियों का क्रय किया गया हो तो उनके प्रमाणक देखकर या स्मरण शक्ति के आधार पर मूल्य का अनुमान लगाया जाता है तथा इसमें से अनुमानित ह्रास घटाकर स्थिति –पत्रक में सम्पत्ति प़क्ष की ओर लिख दिया जाता है।

vi. अन्तिम रहतिया (Closing Stock): दोहरी प्रविष्टि प्रणाली में भी अन्तिम रहतिये का मूल्य गोदाम में रखे हुए बिना बिके माल की सूचियां तैयार करके ही ज्ञात किया जाता है। इकहरी प्रणाली में भी अवशिष्ट माल का मूल्य माल की लागत अथवा वर्तमान बाजार मूल्य जो दोनो में से कम हो, उस के आधार पर स्थिति पत्रक में लिख दिया जाता है।

vii. अदत्त व्यय तथा उपार्जित आय (Outstanding expenses and Accured Income): प्रायः इकहरी लेखा पद्वति के अनुसार लेखा पुस्तकें रखने वाले व्यापारी ऐसे समायोजनों की ओर ध्यान नहीं देते परन्तु यदि इन्हे स्थिति पत्रक में लेना हो तो किसी निश्चित आधार पर इनकी अनुमानित राशि स्थिति पत्रक में लिखी जावेगी।

इस प्रकार स्थिति–पत्रक के सम्पत्ति तथा दायित्व पक्षो के मदो की जानकारी एकत्रित की जाती है। दोनो पक्षो का अन्तर पूंजी की स्थिति दर्शाता है। स्थिति–पत्रक (Statement of Affairs) बनने के पश्चात् ठीक वैसा ही दिखाई देता है जैसा स्थिति विवरण (Balance Sheet) दिखायी देता है जो दोहरा लेखा प्रणाली में बनाया जाता है। परन्तु दोनो में बहुत अन्तर है।

एकल व्यापारी द्वारा अपूर्ण लेखो से लाभ–हानि ज्ञात करना
(Determination of Profit and Loss from Incomplete Records by Sole Traders):

अपूर्ण लेखों की सहायता से निश्चित अवधि के अन्त में अनुमानित लाभ–हानि की गणना की जा सकती है। इसकी दो विधियां प्रचलित हैः–

(1) प्रारम्भिक एवं अन्तिम पूंजी की तुलना करके
(2) अन्तिम खाते तैयार करके

1. प्रारम्भिक एवं अन्तिम पूॅजी की तुलना करके (Comparision of opening and closing capital)

अपूर्ण लेखा प्रणाली में लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये वर्ष के अन्त की पूॅजी ज्ञात कर ली जाती है। इसी प्रकार वर्ष के प्रारम्भ का या पिछले वर्ष के अन्त का स्थिति पत्रक बनाकर वर्ष के आरम्भ की पूॅजी ज्ञात कर ली जाती है ।
वर्ष के प्रारम्भ की पूॅजी व वर्ष के अन्त की पूॅजी ज्ञात करने के पश्चात् वर्ष का लाभ–हानि ज्ञात करने का पत्रक (statement of Profit and Loss) तैयार किया जाता है। वर्ष के अन्त की पूॅजी में वर्ष के आहरण (Drawing) जोड़ दिये जाते है तथा सम्बन्धित वर्ष के अन्तर्गत लायी गई अतिरिक्त पूॅजी कम कर दी जाती है । इस प्रकार ज्ञात समायोजित पूॅजी (Adjusted Capital) की रकम में से वर्ष के प्रारम्भ की पूॅजी कम कर दी जाती है। अन्तर वर्ष का लाभ होता है परन्तु वर्ष के प्रारम्भ की पूॅजी अधिक है तो अन्तर हानि होता है।

(i) प्रारम्भिक स्थिति पत्रक (Opening Statement of Affairs): यह स्थिति पत्रक प्रारम्भिक पूॅजी ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। यदि प्रारम्भिक पूॅजी दी हुई हो तो इसे बनाने की आवश्यकता नहीं है। यह स्थिति–पत्रक चिट्ठे की तरह बनता है। इसमें अन्तर की राशि प्रारम्भिक पूॅजी होती है।

प्रारम्भिक पूॅजी = प्रारम्भिक सम्पत्तियां – प्रारम्भिक दायित्व
(Intial Capital) (Intial Assets) (Initial Liabilities)

Statement of Affairs as on ………..

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	______	Cash In Hand	______
B/P	______	Cash at Bank	______
Outstanding Exp.	______	Debtors	______
Opening Capital	______	B/R	______
(Balancing Figure)			
		Machinery	______
		Building	______
	xxxx		xxxx

(ii.) अन्तिम स्थिति पत्रक (Closing Statement of Affairs): यह स्थिति पत्रक अन्तिम पूँजी ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। यदि अन्तिम पूँजी दी हुई हो तो इसे बनाने की आवश्यकता नही है। यह स्थिति –पत्रक चिट्ठे की तरह बनता है। इसमें अन्तर की राशि अन्तिम पूँजी होती है।

Statement of AffAirs as on ………..

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	______	Cash In Hand	______
B/P	______	Cash at Bank	______
Outstanding Exp.	______	Debtors	______
Closing Capital	______	B/R	______
(Balancing Figure)			
		Stock	______
		Machinery	______
		Building	______
	xxxx		xxxx

अन्तिम पूँजी = अन्तिम सम्पत्तियां – अन्तिम दायित्व
(Closing Capital) (Assets at the end) (Liabilities at the end)

लाभ–हानि का विवरण पत्र (Statement of Profit or Loss):

यह विवरण पत्र लाभ–हानि की गणना करने के लिये बनाया जाता है। लाभ–हानि की गणना निम्न लिखित प्रकार की जाती है–

Statement of Profit or Loss for the year ended on ......

Particular	Amount
Closing Capital	------
Add : Drawings	------
Add : Capital withdrawn	------
Less : Additional Capital	------
Adjusted Capital	
Less : Opening Capital	
Profit (+) or Loss (-) for the year	

उदाहरण (Illustration) 1 : 31 मार्च 2010 को राधारमण के पास निम्नलिखित सम्पत्तियाँ व दायित्व थे–

रोकड़ 400 ₹ बैंक में जमा 4000 ₹ विविध देनदार 12000 ₹ माल 8000 ₹ संयत्र 10,000 ₹ भवन 20,000 ₹ तथा फर्नीचर 6,000 ₹ लेनदार 6,300 ₹ तथा अदत्त खर्च की राशि 1,100 ₹ आके गये।

31 मार्च 2011 को उसकी रोकड़ बाकी 1,000 ₹ माल का रहतिया 17,000 ₹ का तथा विविध देनदार 8,000 ₹ पाये गये। उस दिन बैक अधिविकर्ष 2,000 ₹ का तथा विविध लेनदार 12,000 ₹ के थे साथ ही अदत्त व्यय 2,000 ₹ आके गये।

इस वित्तिय वर्ष की अवधि में उसने 14,000 ₹ के विनियोग पत्र खरीदे, 16,000 ₹ का आहरण किया तथा 1 अक्टूबर 2010 को 10,000 ₹ की अतिरिक्त पूँजी व्यापार में लगाई

संयंत्र पर 10 प्रतिशत तथा भवन पर 5 प्रतिशत ह्रास लगाकर 31 मार्च 2011 को समाप्त वर्ष के लिए उसके लाभ–हानि ज्ञात कीजिये।

Radharaman the following assets and Liabilities on 31st March 2010

Cash in Hand ₹ 400, Balance at Bank ₹ 4,000, Sundry Debtors Rs, 12,000, Stock ₹ 8,000 , Plant ₹ 10,000, Building ₹ 20,000 and Furniture ₹ 6,000, Sundry Creditors ₹ 6,300 and Outstanding Expenses ₹ 1,100

On 31st March 2011, his Cash Balance was Rs, 1,000, He had Stock of Rs, 17,000 , and his Sundry Debtors amounted to ₹ 8,000. On that date he had bank overdraft of ₹ 2000 and had to pay ₹ 12000 to sundry creditors and his outstanding expenses amounted to ₹ 2000.

He Purchased Investment of ₹ 14,000 and had drawn ₹ 16,000 and on 1st October,2010 he bought ₹ 10,000 as additional Capital.

Ascertain his profit or Loss for the year eneded 31st march 2011 after charging depreciation @ 10% on Plant and 5% on Building.

हल (Solution) :

Statement of Affiars as on 31st March 2010

Sundry Creditors	6,300	Cash	400
Outstanding Exp.	1,100	Bank	4,000
Capital (Balancing Figure)	53,000	Sundry Debtors	12,000
		Stock	8,000
		Plant	10,000
		Furniture	6,000
		Building	20,000
	60,400		60,400

Statement of Affiars as on 31st March 2011

Bank Overdraft	2,000	Cash		1,000
Sundry Creditors	12,000	Debtors		8,000
Outstanding Expenses	2,000	Stock		17,000
Capital (Balancing Figure)	58,000	Investment		14,000
		Plant	10,000	
		Less Depreciation	1,000	9,000
		Building	20,000	
		Less Depreciation	1,000	19,000
		Furniture		6,000
	74,000			74,000

Statement of Profit & Loss for the year ended 31st March 2011

Particulars	Amount
Capital on 31st March 2011	58,000
Add : Drawings during the year	16,000
	74,000
Less : Additional Capital	10,000
Adjusted Closing Capital	64,000
Less : Capital 1st April 2010	53,000
Profit during the year ended 31.03.2011	11,000

उदाहरण (Illustration) 2 : अशोक के व्यापार में वर्ष 2010 के आरम्भ एवं अन्त में निम्नलिखित सम्पत्तियॉ एव दायित्व थे, जिनके आधार पर आपको उस वर्ष का व्यापारिक लाभ ज्ञात करना है (The following assests and Liabilities were available in the business of Ashok at the beginning and the end of year 2010. Calculate profit or loss for the year:

	1st Jan 2010 ₹	31st December 2010 ₹
Cash at Bank	2500 (Dr.)	1,500 (Cr.)
Cash in Hand	1,000	3,000
Sundry Debtors	25,000	40,000
Sundry Creditors	5,000	5,500

Stock	10,000	17,500
Plant	15,000	12,500
Furniture	2,500	1,500
Land & Building	30,000	30,000

अशोक ने 1,500 ₹ प्रतिमाह आहरण के रूप में निकाले लेकिन 1 जुलाई 2010 को 5,000 ₹ अतिरिक्त पूँजी के रूप में लगाये। विविध देनदारों पर 5 प्रतिशत आयोजन करना आवश्यक है। भूमि एव भवन पर 5 प्रतिशत ह्रास अपलिखित करना है तथा 5 प्रतिशत वार्षिक दर से पूँजी पर ब्याज लगागाना है। वर्ष के दौरान अशोक ने 2,500 ₹ की लागत का संयंत्र 3,000 ₹ में एंव 1,000 ₹ का फर्नीचर 750 ₹ मे विक्रय किया। (Ashok withdraw ₹ 1500 p.m. and introduce ₹ 1500 on 1st July, 2010. Make 5% provision on sundry debtors. Write off 5% depreciation on land and building and charged interest on Capital @ 5% p.a. During the year Ashok sold Plant costing ₹ 2500 for ₹ 3000 and Furniture costing ₹ 1000 for ₹ 750).

हल Solution

Statement of Affiars as on 1st January 2010

Liabilities	Amoount ₹	Assets	Amount ₹
Sundry Creditors	5,000	Cash at Bank	2,500
Capital (Balancing Figure)	81,000	Cash in Hand	1,000
		Sundry Debtors	25,000
		Stock	10,000
		Plant	15,000
		Furniture	2,500
		Land & Building	30,000
Total	86,000	Total	86,000

Statement of Affiars as on 31st December 2010

	₹		₹
Bank Overdraft	1,500	Cash In Hand	3,000
Sundry Creditors	5,500	Sundry Debtors 40,000	
Capital (Balancing Figure)	94,000	Less : Provision for Bad Doubtful Debts 2,000	38,000
		Stock	17,500
		Plant	12,500
		Furniture	1,500
		Land & Building 30,000	
		Less : Depriciation 1,500	28,500
	1,01,0000		1,01,0000

Statement of Profit & Loss for the year ended 31st December 2010

Particulars	Amount ₹
Capital on 31st December 2010	94,000
Add : Drawings during the year	18,000
	1,12,000
Less : Additional Capital	5,000
Adjusted Closing Capital	1,07,000
Less : Capital 1st Jan 2010	81,000
Profit (Before Charging Intrest on Capital)	26,000
Less Intrest on Capital	4,050
Profit	21,950
Less : Capital Profit on sale of Plant	500
	21,450
Add : Capital Loss on sale of furniture	250
Profit for the year	21,700

उदाहरण (Illustration) 3: 31 मार्च 2010 को निम्नलिखित सूचनाऐं अनीश के पुस्तकों से ली गई है Following information collected from the books of Anish on 31st March, 2010

वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी (Capital at the beginning)	1,20,000 ₹
वर्ष के अन्त में पूँजी (Capital at the end)	2,00,000 ₹
वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी (Capital introduced during the year)	50,000 ₹
वर्ष के दौरान आहरण (Drawing during the year)	30,000 ₹

उसके वर्ष 2009–2010 के अर्जित व्यापारिक लाभ एवं हानि ज्ञात कीजिए (Ascertain profit & loss earned during 2009-2010):

हल (Solution):

Statement of Profit & Loss for the year ended 31st March 2010

Particulars	Amount ₹
Capital on 31st March 2010	2,00,000
Add : Drawing during the year	30,000
	2,30,000
Less : Additional Capital	50,000
Adjusted Closing Capital	1,80,000
Less : Capital 1st April 2009	1,20,000
Profit during the year ended 31.03.2010	60,000

स्थिति–पत्रक एवं स्थिति –विवरण में अन्तर (Difference between Statement of affairs and Balance Sheet)

i. **स्त्रोत** (Sources): स्थिति पत्रक में कुछ सूचनाऐं तो हिसाब की पुस्तकों से ली जाती है तथा अन्य सूचनाएँ व्यापारी के अनुमान पर निर्भर करती है जबकि स्थिति–विवरण (Balance Sheet) व्यापारी की बहियों में खोले गये विभिन्न खातो के शेषों से तैयार किया जाता है।

ii. **उद्देश्य (Objective):** स्थिति पत्रक बनाने का उद्वेश्य पूँजी की राशि ज्ञात करना होता है जिसकी सहायता से लाभ ज्ञात किया जाता है जबकि स्थिति–विवरण बनाने का उद्वेश्य आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना होता है।

iii. **शुद्वता** (Accuracy): लेखे अपूर्ण होने के कारण स्थिति पत्रक बनाते समय कोई मद लिखने से छूट सकती है परन्तु स्थिति विवरण दोहरी प्रविष्टि प्रणाली से बनाये जाने के कारण किसी मद के छूटने की संभावना नही रहती है।

iv. **पूँजी ज्ञात करना** (As certain Capital)**:** स्थिति–पत्रक (Statement of Affairs) में पूँजी सम्पत्ति व दायित्व पक्ष के अन्तर से ज्ञात की जाती है जबकि स्थिति विवरण (Balance Sheet) मे लिखी जाने वाली पूँजी, पूँजी खाता बनाकर उसके शेष से ज्ञात की जाती है।

v. **विश्वसनीयता** (Reliability)**:** यदि स्थिति–पत्रक (Statement of Affairs) में कोई सम्पत्ति लिखना भूल गए है तो पूँजी जितनी होनी चाहिये उससे कम निकलेगी और स्थिति पत्रक के दोनों पक्ष मिल जावेगे, इसके विपरीत कोई दायित्व लिखना भूल गए हो तो पूँजी अधिक निकलेगी और दोनो पक्ष मिल जाते है।

यदि स्थिति विवरण (Balance Sheet) में कोई सम्पत्ति या दायित्व लिखना भूल गए है तो स्थिति विरण की जोड़ नही मिलेगी क्योकि पूँजी दोनो पक्षों के अन्तर से नहीं निकाली जाती है बल्कि पूँजी खाते बनाकर स्वतन्त्र रूप से ज्ञात की जाती है इसलिए स्थिति–विवरण अधिक विश्वसनीय है स्थिति पत्रक उतना विश्वसनीय नहीं है।

vi. **तलपट बनाना** (Preparation of Trial Balance)**:** स्थिति पत्रक बनाने से पूर्व तलपट नहीं बनाया जाता जबकि स्थिति–विवरण बनाने से पूर्व तलपट बनाकर खतौनी की गणितीय शुद्वता की जाँच की जाती है।

2. अन्तिम खाते तैयार करना (Preparation of Final Accounts) : अपूर्ण लेखा प्रणाली द्वारा लाभ–हानि ज्ञात करने की उपरोक्त विधि के अन्तर्गत व्यापारिक वर्ष की प्रारम्भिक तथा अन्तिम तिथियों पर सम्पत्तियों व दायित्वों का ज्ञात होना आवश्यक है। अपूर्ण लेखा प्रणाली का प्रयोग करने वाला व्यापारी अपनी रोकड़ बही अवश्य तैयार करता है। वर्ष के अन्त मे पूरी रोकड़ बही की सारांश तालिका बनाई जा सकती है। यदि प्रश्न में वर्ष के प्रारम्भ के तथा अन्त के सम्पत्तियों व दायित्वों के शेषों के अतिरिक्त रोकड़ बही का सारांश भी दिया गया हो तो व्यापार का लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये एक वैकल्पिक विधि का उपयोग किया जा सकता है व्यापापर व लाभ–हानि खाता एव चिट्ठा बनाने के लिए जो मदे ज्ञात नहीं होती है, उन्हे विभिन्न खाते या विवरण बनाकर ज्ञात कर नियमित व्यापारिक तथा लाभ–हानि

खाता (Trading and Profit Loss Account) बनाकर लाभ–हानि ज्ञात किया जा सकता है तथा स्थिति –विवरण (Balance Sheet) बनाकर अन्तिम खाते नियमित रूप से प्रस्तुत किये जा सकते है।

प्रत्येक प्रश्न में कौन–कौन से खाते एवं विवरण अज्ञात मदे ज्ञात करने के लिये बनाये जायेगे इसको निर्धारित करना कठिन कार्य है लेकिन यह व्यापारी द्वारा तैयार किये लेखो की अपूर्णता एवं लेखापाल की कार्यकुशलता एवं अनुभव पर निर्भर करता है। लेकिन निम्नप्रक्रिया लेखापाल का मार्गदर्शन कर सकती है–

अन्तिम खाते तैयार करने के पहले '' कुल विक्रय '' व ''कुल क्रय'' ज्ञात करना आवश्यक है। कुल विक्रय ज्ञात करने के लिये '' उधार विक्रय'' ज्ञात करना होता है। उधार विक्रय की राशि ज्ञात करने के लिए ''कुल देनदार खाता '' बनाया जाता है। इसी प्रकार ''कुल क्रय'' ज्ञात करने के लिए ''उधार क्रय'' ज्ञात करना होता है। उधार क्रय की राशि ज्ञात करने के लिए '' कुल लेनदार खाता'' बनाया जाता है।

प्राप्य बिल खाता बनाना (Prepatation of Bills Receivable Account):

चूकि प्रश्न में प्राप्य बिलो के प्रारम्भिक व अन्तिम दोनो शेष दिये हुए होते है तथा वर्ष के दौरान प्राप्य बिलो से प्राप्त राशि भी रोकड़ सारांश तालिका से ज्ञात की जा सकती है। अतः इस जानकारी को प्राप्य बिल खाते में यथा स्थान लिखकर देनदारो से प्राप्त बिलो की राशि ज्ञात की जाती है। प्राप्य बिलो का अन्तिम शेष तथा प्राप्य बिलो पर प्राप्य रोकड़ राशि के योग का प्राप्य बिलो के प्रारम्भिक शेष पर आधिक्य ही इस वर्ष के दौरान देनदारो से प्राप्त नये बिल होंगे।

Bill Receivable Account

		₹			₹
	To Balance b/d	_______		By Cash A/c	_____
	To Debtors A/c (B/R Received)	_______		By Bank A/c (Bills Discounted)	_____
				By Discount A/c	_____
				By Debtors (B/R Dishonoured)	_____
				By Creditors (B/R Endorsed)	_____
				By Balance c/d	_____
		_______			_____

कई बार उपरोक्त खाते से प्राप्य बिलो का प्रारम्भिक एवं अन्तिम शेष, प्राप्य बिलो के बदले प्राप्त राशि, देनदारो से प्राप्त स्वीकृत बिल की राशि ज्ञात कर सकते है। दिये गये प्रारूप में एक मद के अतिरिक्त समस्त सूचनाऐं होने पर अज्ञात मद ज्ञात की जा सकती है। सामान्यया कक्षा 11 के विद्यार्थीयों को उपरोक्त चार मदों में से ही अज्ञात मद ज्ञात करने की आशा की जाती है।

2. **कुल देनदार खाता बनाना (Preparation of Total Debtors Account):**

विविध देनदारो के सम्बन्ध में प्रश्न में दी गई विविध जानकारी जैसे प्रारम्भिक शेष, अन्तिम शेष, देनदारो से प्राप्त राशि तथा उपरोक्त प्रकार से ज्ञात प्राप्य बिलो की प्राप्ति की राशि विविध देनदारो के खाते में यथा स्थान लिख दी जानी चाहिये। ऐसा करने पर जमा पक्ष के योग का नाम पक्ष की मदो के योग पर आधिक्य ही उधार विक्रय होगा। इस उधार विक्रय में नकद विक्रय जोड़ने पर कुल विक्रय ज्ञात हो जाता है।

कुल विक्रय = नकद विक्रय + उधार विक्रय

Total Debtors Account

			₹				₹
	To Balance b/d		_______		By Cash Received		_____
	To Sales (Credit)		_______		By Bank (Cheque Received)		_____
	To B/R Dishonoured		_______		By B/R Received		_____
	To Interest Charged		_______		By Discount Allowed		_____
	To Cash Refunds		_______		By Sales Returns		_____
	To Creditors A/c		_______		By Bad debts		_____
	(Endorsed B/R Dishonoured)		_______		By Transfer (If any)		_____
					By Allowances		_____
					By Balance c/d		_____
			xxxxxxx				xxxxxx

3. **देय बिल खाता बनाना (Preparation of Bills Payable Account):**

देय बिल खाते के प्रारंभिक एवं अंतिम शेष दिये होते है तथा देय बिलों का भुगतान रोकड़ तालिका से ज्ञात किया जा सकता है । अतः इन सूचनाओं को देय बिल खाते में यथा स्थान लिखकर स्वीकृत किये गये देय बिलों की राशि ज्ञात की जा सकती है ।

Bills Payable Account

Dr. Cr.

			₹				₹
	To Cash/ Bank A/c		-		By Balance b/d		-
	To Rebate A/c		-		By Creditors A/c (Bills Accepted Balancing Figures)		-
	To Creditors (B.P.Withdrawan)						
	To Balance c/d		-				

4. **कुल लेनदार खाता बनाना (Preparation of total Creditors Account):**

विविध लेनदारों के सम्बन्ध में प्रदान की गई जानकारी जैसे इनका प्रारंभिक एवं अंतिम शेष, लेनदारों को चुकाई गई राशि, देय बिल खाते से ज्ञात प्रदान की गई स्वीकृतियां आदि यथा स्थान लिखकर उधार क्रय की राशि ज्ञात की जा सकती है । इस तरह नाम पक्ष के योग का जमा पक्ष के योग पर आधिक्य उधार क्रय होगा । इस प्रकार ज्ञात उधार क्रय में रोकड़ क्रय जोड़कर कुल क्रय ज्ञात किया जाता है ।

कुल क्रय = उधार क्रय + नकद क्रय

Total Creditors Account

Dr. Cr.

			₹				₹
	To Cash/ Bank A/c		-		By Balance b/d		-
	To Discount A/c		-		By B.P. Withdrawal		-
	To Purchases Return A/c		-		By Int. Charged		
	To Bills Payable A/c				By Purchases A/c (Credit Purchase Balacing Figure)		
	To Balance c/d						

उपरोक्त खाते से कुल लेनदारो का प्रारम्भिक एवं अन्तिम शेष, लेनदारो को भुगतान की गई राशि, उधार क्रय की राशि ज्ञात की जा सकती है।

कुल क्रय = नकद क्रय + उधार क्रय

नोट : 1. कभी–कभी प्रश्न में देनदारो तथा लेनदारो से सम्बन्धित अन्य जानाकरी भी दे दी जाती है। जैस छूट, डूबत ऋण, अनादृत प्राप्य बिल, देय बिलों का नवीनीकरण आदि। उपरोक्त चारो खाते बनाते समय इस जानकारी को भी उपयुक्त पक्षो में लिखे जाने पर ही सही परिणाम ज्ञात किये जा सकते है।

2. कुल देनदार व कुल लेनदार खातो में निम्नलिखित मदे नही लिखी जाती है जैसे नकद क्रय, नकद विक्रय, व्यापारिक बट्टा, बिल को भुनाना, संदिग्ध एवं डूबत ऋणों के लिये प्रावधान, डूबा हुआ रूपया पुनः प्राप्त होना, देय बिल एवं प्राप्य बिलो का प्रारम्भिक एवं अन्तिम शेष, देनदारो पर बट्टा आयोजन लेनदारो पर बट्टा आयोजन, स्थाई सम्पत्तियो का क्रय–विक्रय।

उदाहरण (Illustration) 4 : रौनक द्वारा प्रदान की गई निम्नलिखित सूचनाओ से कुल विक्रय की गणना कीजिये।

(Calculate total sales from the following information supplied by Ronak)

Capital in the beginning	1,20,000	Cash Sales	40,900
Cash in Hand in the beginning	40,000	Bad debts W/o	2,800
B.R. in the beginning	7,800	Returns Outward	10,000
Debtors in the beginning	30,800	Credit Purchase	1,50,000
Cash received from as Loan	10,000	Cash Paid to Creditors	30,000
Cash received from Debtors	70,000	Return inwards	8,700
B.R. encashed during the year	20,900	B.R. dishonoured	1,800
B.R. at the end	6,000	Debtors at the end	25,500

Cash received from a customer whose account was closed Last year because of his insolvency ₹ 500

हल (Solution)

Bills Receivable Account

2010			₹	2010			₹
01.01	To Balance B/d		7,800	01.01. to	By Cash A/c		20,900
01.01 to	To Debtors A/c		20,900	31.12	By Debtors A/c		1,800
31.01	(Balancing Figure)			31.12.	By Balance c/d		6,000
			28,700				28,700

Total Debtors Account

2010			₹	2010			₹
01.01	To Balance b/d		30,800	01.01 to	By Cash A/c		70,000
01.01. to	To Bills Receivable A/c		1,800	31.12	By Bad Debts		2,800
31.01	To Sales A/c (Balancing Figure)		95,300	31.12.	By Sales Return		8,700
					By Bill Receivable A/c (As per B/R A/c)		20,900
					By Balance c/d		25,500
			1,27,900				1,27,900

Total Sales = Cash Sales + Credit Sales
= ₹ 40,900 + ₹ 95,300 or ₹ 1,36,200

उदाहरण (Illustration) 5 : हर्ष द्वारा प्रदान की गई निम्नलिखित सूचनओ से कुल क्रय की गणना कीजिये।
(Calculate total purchase from the following information supplied by Harsh)

	₹		₹
Opening Balance of Bill Payable	500	Bill Payable discharged during the year	890
Opening Balance of Creditors	600	Return Outward	1,200
Closing Balance of Bill Payable	700	Cash Purchases	2,580
Closing Balance of Creditors	400		
Cash paid to creditors during the year	3,020		

हल (Solution)

Bill Payable Account

			₹				₹
	To Cash		890		By Balance c/d		500
	To Balance c/d		700		By Crediors (Bill accepted) B.F		1,090
			1,590				1,590

Total Creditors Account

			₹				₹
	To Cash		3,020		By Balance b/d		600
	To Return outward		120		By Purchase (Balancing Figure)		4,030
	To Bill Payable accepted		1,090				
	To Balance c/d		400				
			4,630				4,630

Total Purchase = Cash Purchase + Credit Purchase
= ₹ 2,580 + ₹ 4,030 = 6,610

5. नकद क्रय तथा नकद विक्रय की राशि निम्नलिखित प्रकार ज्ञात करेगें :–

नकद क्रय = कुल क्रय – उधार क्रय

नकद विक्रय = कुल विक्रय – उधार विक्रय

6. कुल बिक्री की राशि की गणना (Calculation of total Sales) :

कई बार प्रश्न में कुल बिक्री की राशि नहीं दी गई हो तो बेचे गए माल की लागत में सकल लाभ की राशि जोड़कर कुल विक्रय की राशि को ज्ञात कर लेते है। सकल लाभ की राशि ज्ञात करने के लिये प्रायः सकल लाभ की दर बिक्री पर दी गई हो तो उसे निम्न सूत्र द्वारा लागत पर बदल लिया जाना चाहिये :

$$= \frac{\text{Gross Profit Rate}}{(100-\text{ Gross Profit Rate})} \times \text{Cost of Goods Sold}$$

कुल बिक्री की राशि निम्नलिखित तरीके से ज्ञात कर सकते हैः–

		₹
Opening Stock	=	________
Add: Purchases	=	________
		________
Less : Closing Stock		________
Cost of Goods Sold		________
Add : Gross Profit		________
Total Sales		________

7. स्थाई सम्पत्ति खाता (Fixed Assets Account) : स्थाई सम्पत्तियों की खरीद, बिक्री, बिक्री पर होने वाले लाभ या हानि, वर्ष का ह्रास तथा वर्ष के अन्त में सम्पत्ति का शेष या वर्ष के प्रारम्भ का शेष ज्ञात करने के लिए इस खाते को बनाया जाता है। उक्त वर्णित मदो मे से कोई मद अज्ञात हो तो इस खाते की सहायता से ज्ञात की जा सकती है। इस खाते का प्रारूप निम्नलिखित है–

Fixed Assets Account

	To Balance b/d		______		By Cash / Bank /Party A/c		______
	To Supplier / Bank / Cash A/c (Purchases)		______		By Depreciation on Assets sold A/c		______
	To P&L A/c (Profit on sale)		______		By P & L A/c (Loss on Sale)		______
					By Depreciation A/c (Depn. On existing assets at the end of the year)		______
					By Balance c/d		______
			______				______

8. स्कन्ध खाता (Stock Account) :

इस खाते में वर्ष के प्रारम्भ में रहतिया, वर्ष के अन्त में रहतिया, माल का कुल क्रय, क्रय वापसी, कमी (Shortage), आधिक्य (Surplus) तथा बेचे गये माल की लागत का लेखा किया जाता है। उक्त मदो मे से काई भी मद अज्ञात हो तो इस खाते की सहायता से ज्ञात की जा सकती है। इस खाते का प्रारूप निम्नलिखित है–

Stock Account

	To Balance b/d		______		By Purchase Return A/c		______
	To Purchases (Total Cash & Credit Purchase)		______		By Shortage A/c		______
	To Surplus A/c				By Cost of goods sold A/c		______
					By Balance c/d		______
			______				______

प्रारम्भिक एवं अन्तिम स्टॉक की राशि निकालना : यदि प्रारम्भिक या अन्तिम स्टॉक नही दिया गया हैं तो यह व्यापार खाता बनाकर ज्ञात कर लेते है। व्यापार खाते की समस्त ज्ञात मदों को लिख देते है । यदि सकल लाभ की दर बिक्री पर न होकर लागत पर होने की स्थिति में निम्नलिखित सूत्र द्वारा बिक्री पर सकल लाभ की दर में बदल लिया जायेगा।

$$\frac{\text{Gross Profit Rate}}{(100 + \text{Gross Profit Rate})} \times \text{Sales}$$

सकल लाभ की राशि को व्यापार खाते के नाम पक्ष में लिखने के बाद यदि जमा पक्ष का योग नाम पक्ष से ज्यादा है तो अज्ञात मद प्रारम्भिक स्टॉक होगा यदि नाम पक्ष का योग जमा पक्ष के योग से ज्यादा होने पर अज्ञात मद अन्तिम स्टॉक होगा।

9. वर्ष के प्रारम्भ का स्थिति–विवरण (Balance Sheet at the beginning of the year) : वर्ष के प्रारम्भ की सम्पत्तियों तथा दायित्व दिये हुए होते है। इस सूचना से वर्ष के प्रारम्भ का स्थिति –विवरण बनाया जाता है। स्थिति विवरण में सम्पत्तियों का दायित्वों पर आधिक्य ही वर्ष के प्रारम्भ की पूॅजी होती है।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वर्ष के आरम्भ की पूॅजी ज्ञात करते समय सम्पत्ति पक्ष की और रोकड़ का शेष भी रोकड़ बही देखकर लिख दिया जाना चाहिये। कभी–कभी अन्य स्थायी सम्पत्तियो की सूचना नहीं दी होने के कारण उनका खाता बनाकर ज्ञात कर लिया जाता है। कभी–कभी प्रारम्भिक रोकड़, शेष ज्ञात करने के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाता बनाना आवश्यक हो जाता है।

10. रोकड़ खाता या रोकड़ बही या प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Cash account or Cash Book or Receipt and Payment Account) वर्ष के अंत का रोकड तथा बैंक का शेष (Cash and Bank Balance at the end of year) ज्ञात करने के लिए प्रश्न में रोकड़ का सारांश दिया होता हैं यदि रोकड़ तथा बैक से किये गये भुगतान और रोकड़ तथा बैक की प्राप्तियां अलग–अलग दी हुई हो तो द्विस्तम्भीय रोकड़ बही बना ली जाती है। एक स्तम्भ रोकड़ का तथा दूसरा स्तम्भ बैक का होता है।

कई बार प्रश्न में केवल प्राप्तियॉ व भुगतान ही दिये जाते है और स्पष्टीकरण नही दिया जाता कि कितनी रकम बैक से या कौनसी रकम रोकड़ से चुकाई गई है । इस परिस्थिति में द्वि स्तभ्भीय रोकड़ बही नहीं बनाई जा सकती है। रोकड़ बही के स्थान पर प्राप्ति व भुगतान खाता बनाया जाता हैं । रोकड़ व बैक दोनों के प्रारम्भिक शेषों का जोड़ इस खाते का प्रारम्भिक शेष होता है। दी गई समस्त प्राप्तिया नाम पक्ष में और समस्त भुगतान जमा पक्ष मे लिखे जाते है। प्राप्ति व भुगतान खाते का अन्तिम शेष ज्ञात कर लिया जाता है। यह अन्तिम शेष बैंक व रोकड़ का सम्मलित शेष होता है। यदि बैंक का अन्तिम शेष दिया हुआ है तो प्राप्ति व भुगतान खाते के अन्तिम शेष में से इसको घटाने पर रोकड़ का अन्तिम शेष ज्ञात हो जाता है।

11. समायोजन सम्बन्धी लेखें :– इस विधि में समायोजन प्रविष्टियां नही की जाती है। अन्तिम खाते तैयार करते समय इन समायोजनों की राशि ज्ञात कर इन्हे अन्तिम खातों मे समायोजित करना चाहिये।

उदाहरण (Illustration) 6 : पियूष द्वारा प्रदान की गई निम्नलिखित सूचनाओं से कुल क्रय और विक्रय की गणना कीजिये।

(Calculate total purchase & total sales from the following information supplied by Piyush).

	₹		₹
देनदार (Debtors) 1.4.2009	40,000	देनदार (Debtors) 31 मार्च 2010	80,000
लेनदार (Creditors) 1.4.2009	50,000	लेनदारो को भुगतान (Payment to Creditors)	80,000
प्राप्य विपत्र (Bill Receivable) 1.4.2009	30,000	प्राप्य बिलो से प्राप्ति (Received from Bill Receivable)	25,000
देय विपत्र (Bill Payable) 1.4.2009	45,000	देय विपत्रो का भुगतान (Payment to Bill Payable)	40,000
बट्टा प्राप्त (Discount Recived)	5,000	लेनदार (Creditors) 31 मार्च 2010	40,000
डूबत ऋण (Baddebts)	2,000	देय विपत्र (Bill Payable) 31 मार्च 2010	50,000
विक्रय वापसी (Sales Return)	4,000	प्राप्य विपत्र (Bill Receivable) 31 मार्च 2010	35,000
बट्टा दिया (Discount Allowed)	3,000		
नकद विक्रय (Cash Sales)	10,000		
नकद क्रय (Cash Purchase)	8,000		
देनदारो से प्राप्ति (Cash Received from Debtors)	1,00,000		

हल (Solution):

Bills Receivable Account

Dr. Cr.

			₹				₹
01.04.2009	To Balance b/d		30,000		By Cash A/c		25,000
31.03.2010	To Debtors A/c (Balancing Figure)		30,000	31.03.2010	By Bal. c/d		35,000
			60,000				60,000

Total Debtors Account

Dr. Cr.

			₹				₹
01.04.2009	To Balance b/d		40,000		By Cash A/c		1,00,000
31.03.2010	To SalesA/c (Balancing Figure)		1,79,000		By Bad Debts A/c		2,000
					By Sales Return A/c		4,000
				31.03.2010	By Discount A/c		3,000
					By B/R A/c (As per B/R. A/c)		30,000
					By Balance c/d		80,000
			2,19,000				2,19,000

Total Sales = Cash Sales + Credit Sales
₹ 1,89,000 = ₹ 10,000 + ₹ 1,79,000

Bills Payable Account

Dr. Cr.

			₹				₹
01.04.2009	To Cash A/c		40,000	01.4.2009	By Balance b/d		45,000
31.03.2010	To Balance c/d		50,000	31.03.2010	By Creditors A/c (B.F)		45,000
			90,000				90,000

Total Creditors Account

Dr. Cr.

			₹				₹
	To Cash A/c		80,000	01.04.2009	By Balance b/d		50,000
	To Discount A/c		5,000		By Purchase A/c (B.F)		1,20,000
	To B/P A/c (As per B/P A/c		45,000				
31.03.2010	To Balance c/d		40,000				
			1,70,000				1,70,000

Total Purchase = Cash Purchase + Credit Purchase
₹ 1,28,000 = ₹ 8,000 + ₹ 1,20,000

उदाहरण (Illustration) 7 : निम्नलिखित सूचनाओं से अन्तिम रहतियाँ का मूल्य ज्ञात कीजिये (Calculate the value of closing Stock from the following particular)

		₹
1.	प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock)	18,000
2.	क्रय (Purchases)	69,000
3.	विक्रय (Sales)	1,02,000
4.	विक्रय वापसी (Sales Return)	2,000
5.	उत्पादन खर्च (Productive Expenses)	10,000

यदि सकल लाभ की दर बिक्री पर 25% है तो अन्तिम रहतिये का मूल्य ज्ञात कीजिए। (If G.P. rate is 25%, find out the value of Closing Stock)

हल (Solution)

Dr. **Trading Account** Cr.

	₹		Rs
To Opening Stock	18,000	By Sales 1,02,000	
To Purchases	69,000	Less : Sales Return 2,000	1,00,000
To Productive Expenses	10,000	By Closing Stock	22,000
To Gross Profit	25,000	(Balancing Figure)	
(25% on 1,00,000)			
	1,22,000		1,22,000

नोट :– 1. व्यापारिक खाते के नाम पक्ष के जोड़ में से जमा पक्ष का जोड़ घटाकर अंतिम रहतिया (Closing Stock) 22,000 ₹ ज्ञात किया गया ।

2. उपरोक्त प्रश्न में सकल लाभ की दर बिक्री पर 25 प्रतिशत है जिसे निम्नलिखित सूत्र द्वारा सकल लाभ को ज्ञात किया गया :

$$\text{Gross Profit} = \frac{\text{G.P.Rate}}{100} \times \text{Net Sales}$$

$$\text{Gross Profit} = \frac{25}{100} \times 1,00,000 = 25,000 \text{ रू}$$

(ii) यदि प्रश्न में सकल लाभ की दर लागत पर (On Cost) दी होती तो हम निम्नलिखित सूत्र के द्वारा सकल लाभ को ज्ञात करेंगे।

$$\text{Gross Profit} = \frac{\text{G.P.Rate}}{100 + \text{Rate}} \times \text{Net Sales}$$

$$\text{Gross Profit} = \frac{25}{125} \times ₹\ 1,00,000 = 20,000 \text{ रू}$$

उदाहरण (Illustration) 8 : विष्णुकान्त ने अपनी बहियॉ अपूर्ण लेखा पद्वति के अनुसार रखी है। उसके वर्ष के प्रारम्भ में तथा अन्तिम दिन को सम्पत्तियां व दायित्व निम्नलिखित थे–

(Vishnukant kept his books according to incomplete Records system his asets and Liabilities at the beginning and at the end of the year were as Follows):

	01.04.2010	01.04.2011
	₹	₹
Debtors	40,000	60,000
Stock	55,000	75,000
Furniture	4,000	4,000
Machinery	40,000	40,000
Land & Buildings	50,000	50,000
Creditors	38,000	44,000

इसके रोकड़ व्यवहारों का सारांश निम्नलिखित है :

(The summary of his Cash transaction is given below) :

Receipts	₹	Payment	₹
Cash Balance 01.04.2010	3,000	Payment to Creditors	56,000
Balance at Bank	12,000	Drawings	2,000
Received from Debtors	70,000	Salary	10,000
Cash Sales	10,000	Rent	8,000
		Insurance & Taxes	6,000
		Sundry Expenses	5,000
		Carrige	4,000
		Cash Balance 31.03.2011	1,000

उसने ग्राहको को 4,000 ₹ बट्टा दिया तथा लेनदारो से 3,000 रू बट्टा प्राप्त किया। किराये के 2,000 रू अदत्त है तथा 500 रू बीमे के अग्रिम भुगतान किये गये है। फर्नीचर व मशीनो पर 10 प्रतिशत तथा भवन व भूमि पर 5 प्रतिशत ह्रास लगाये। 31 मार्च 2011 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापारिक व लाभ–हानि खाता बनाइये तथा उसी तिथि का स्थिति विवरण बनाइये।

(He has allowed discount to customer ₹ 4,000 and received discount Rs 3,000 from his creditors. ₹ 2,000 is outstanding for Rent and ₹ 500 has been prepaid for insurance. Charge depreciation at 10% on Furniture and Machinery and 5% depreciation on land and building. Prepare Trading and Profit and Loss Account for the year ended 31st March 2011 and the Balance sheet as on that date.

हल (Solution) :

Working Note **Total Debtors Account**

Dr. Cr.

			₹				₹
	To Balance b/d		40,000		By Cash A/c		70,000
	To Credit Sales (Balancing Figure)		94,000		By Discount A/c		4,000
					By Balance c/d		60,000
			1,34,000				**1,34,000**

Total Creditors Account

Dr. Cr.

			₹				₹
	To Cash A/c		56,000		By Balance b/d		38,000
	To Discount A/c		3,000		By Credit Purchases (Balancing Figure)		65,000
	To Balace c/d		44,000				
			1,03,000				**1,03,000**

Statement of Affairs as on 1st April, 2010

	₹		₹
Creditors	38,000	Cash	3,000
Capital (Balancing Figure)	1,66,000	Bank	12,000
		Debtors	40,000
		Stock	55,000
		Furniture	4,000
		Machinery	40,000
		Land & Building	50,000
	2,04,000		**2,04,000**

Receipts and Payments Account for the year ended on 31st March, 2011

To balance b/d			By Creditors	56,000
Cash	3,000		By Drawings	2,000
Bank	12,000	15,000	By Salary	10,000
To Debtors		70,000	By Rent	8,000
To Sales		10,000	By Insurance and Taxes	6,000
			By Sundry Expenses	5,000
			By Carriage	4,000
			By Balance C/d	4,000
		95,000		**95,000**

Calculation of Bank Balance at the end	₹
Combined Cash & Bank Balances	4,000
Less : Cash Balance on 31.03.2011	1,000
Balance at Bank	3,000

Trading and Profit and Loss Account
for the year ended 31st March, 2011

Dr. Cr.

		₹		₹
To Stock		55,000	By Sales (Including for cash ₹ 10,000)	1,04,000
To Purchases		65,000	By Stock	75,000
To Carriage		4,000		
To P & L A/c		55,000		
		1,79,000		**1,79,000**
To Salary		10,000	By Trading A/c	55,000
To Rent	8,000		By Discount	3,000
Add : Outstanding	2,000	10,000		
To Insuranse & Taxes	6,000			
Less : Prepaid	500	5,500		
To Sundry Expenses		5,000		
To Discount		4,000		
To Depreciation on :		6,900		
Furniture	400			
Machinery	4,000			
Land & Building	2,500			
To Net Profit (Transferred to Capital)		16,600		
		58,000		**58,000**

Balance Sheet as on 31st March, 2011

		₹			₹
Sundry Creditors		44,000	Cash in hand		1,000
Rent Outstanding		2,000	Cash at Bank		3,000
Vishnukant's Capita	1,66,000		Debtors		60,000
Add : Net Profit	16,600		Stock		75,000
	1,82,600		Prepaid Insurance		5,00
Less : Drawings	2,000	1,80,600			
			Furniture	4,000	
			Less : Deprciation	400	3,600
			Land & Building	50,000	
			Less : Deprciation	2,500	47,500
			Machinery	40,000	
			Less : Deprciation	4000	36,000
		2,26,000			**2,26,000**

उदाहरण (Illustration) 9: 1 जनवरी 2010 को अक्षय ने 45,000 ₹ की पूँजी से व्यापार आरम्भ किया। उसने तुरन्त 24,000 ₹ का फर्नीचर खरीदा । वर्ष के दौरान उसने अपने चाचा से 3,000 ₹ का उपहार प्राप्त किया तथा 5,000 ₹ अपने पिता से उधार लिये। वह अपने घरेलु खर्चों के लिये 600 ₹ प्रतिमाह का आहरण करता है। उसके कोई बैंक खाता नहीं है तथा सारे व्यवहार नकद में ही होते है। वह किसी प्रकार की पुस्तके नही बनाता परन्तु निम्नलिखित सूचनाऐं प्रदान करता है। :–

(Akshay commenced businees on 1st January, 2010 with a capital of ₹ 45,000. He immediately purchased Furniture of ₹ 24,000. During the year he received from his uncle a gift of ₹ 3,000 and he borrowed from his house hold expenses. He had no bank account and dealing were in cash. He did not maintain any books but following information is given).

	₹
Sales (Including Cash Salres ₹ 30,000)	1,00,000
Purchase (Including Cash Purchase ₹ 10,000	75,000
Carriage Inward	700
Wages	300
Discount allowed to debtors	800
Salaries	6,200
Bad debts written off	1,500
Trade Expenses	1,200
Advertisment	2,200

उसने 1,300 ₹ का समान व्यक्तिगत प्रयोग में लिया तथा 500 ₹ अपने पुत्र को परीक्षा तथा कॉलेज शुल्क के दिये। 31 दिसम्बर 2010 को उसके देनदार 21,000 ₹, लेनदार 15,000 ₹ तथा रहतिया 10,000 ₹ का था। फर्नीचर पर 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास लगाना है। 31 दिसम्बर 2010 को समाप्त हाने वाले वर्ष का व्यापार तथा लाभ–हानि खाता एवं उसी तिथी को चिट्ठा बनाइये।

(He used goods wroth ₹ 1,300 for personal purpose and paid ₹ 500 to his son for examination and college fee. On 31st December 2010 his debtors worth ₹ 21,000, creditors ₹ 15,000 and stock ₹ 10,000 furniture to be depreciated By 10% P.A. Prepare Trading and Profit and Loss Account for the year ended 31st December, 2010 and Balance shee as at 31st December 2010)

हल (Solution) :

Working Note :

Total Creditors Account

Dr. Cr.

2010			₹	2010			₹
01.01	To Cash A/c (Balancing Figure)		50,000	01.01.	By Balance b/d		-
31.12	To Balance c/d		15,000	01.01. to 31.12	By Purchases (75000-10000)		65,000
			65,000				65,000

Total Debtors Account

Dr. Cr.

2010		₹	2010			₹
01.01. to 31.12	To Sales (₹ 100000-₹ 30000)	70,000	01.01 to 31.12.	By Cash A/c (Balancing Figure)		46,700
			31.12.	By Discount A/c		800
			31.12.	By Bad Debts A/c		1,500
			31.12.	By Balance c/d		21,000
		70,000				**70,000**

Cash Account

2010			₹	2010			₹
1.1 to	To Capital A/c		45,000	01.01 to	By Furniture A/c		24,000
31.12	To Capital A/c		3,000	31.12	By Drawings A/c		7,700
31.12	To Loan from Father A/c		5,000	31.12	By Purchase A/c		10,000
31.12	To Sales A/c		30,000	31.12	By Creditors A/c		50,000
31.12	To Debtors		46,700	31.12	By Carriage A/c		700
				31.12	By Wages A/c		300
				31.12	By Salaries A/c		6,200
				31.12	By Trade Exp. A/c		1,200
					By Advertisment A/c		2,200
					By Balance C/d		27,400
			1,29,700				**1,29,700**

Trading and Profit and Loss Account
for the year ended 31st December, 2010

Dr. Cr.

		₹		₹
To Purchases	75,000		By Sales	1,00,000
Less : Drawing	1,300	73,700		
To Carriage		700	By Stock	10,000
To Wages		300		
To Gross Profit		35,300		
		1,10,000		1,10,000
To Salary		6,200	By Gross Profit	35,300
To Discount		800		
To Bad Debts		1,500		
To Advertisment		2,200		
To Trade Expenses		1,200		
To Depreciation on Furniture		2,400		
To Net Profit		21,000		
		35,300		35,300

Balance Sheet as on 31st December, 2010

		₹		₹
Creditors		15,000	Cash	27,400
Loan from Father		5,000	Debtors	21,000
Capital	45,000		Stock	10,000
Add : Gift Received	3,000		Furniture	21,600
Add : Net Profit	21,000			
	69,000			
Less : Drawing	9,000	60,000		
		80,000		**80,000**

उदाहरण (Illustration) 10 : ऋचा ट्रेडिंग कम्पनी अपने हिसाब किताब की पूर्ण पुस्तके नही रखती है। वह 31 दिसम्बर,2010 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये अन्तिम खाते आपसे तैयार करवाना चाहती है। आपको निम्नलिखित सूचनाऐं उपलब्ध करवाती है :

रोकड़ बही का सारांश (Summary of Cash Book)

	₹
Cash Balance on 1st January 2010	4,675
Recepit from customer	30,250
Payment to Suppliers	20,100
Personal Drawing	4,000
Salaries	2,250
Electricity Expenses	400
Advertising Expenses	600
Cartages	300
Octoroi	350

उसके अन्य सम्पत्तियॉ एवं दायित्व निम्न प्रकार थे :–

Particular	31st December, 2009 ₹	31st December,2010 ₹
Debtors	3,150	4,300
Creditors	2,050	3,650
Outstanding Salaries	400	350
Outstanding Elecricity Expenses	200	250
Outstanding Advertisment Expenses	450	300

31 दिसम्बर 2010 को स्टॉक का मूल्य 4,000 ₹ है लेकिन ऋचा ट्रेडिंग कम्पनी के पास प्रारम्भिक स्टॉक के सम्बन्ध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। वह आपको सूचित करती है कि अपने माल को लागत में 25 प्रतिशत लाभ जोड़कर बेचती है।

हल (Solution): Working Note

1. उधार विक्रय की राशि इस प्रकार ज्ञात करेंगे–

Total Debtors Account

Dr. | Cr.

			₹				₹
	To Balance b/d		70,000		By Cash A/c		30,250
	To Credit Sales (Balancing Figure)		31,400		By Balance C/d		4,300
			34,550				**34,550**

2. उधार क्रय की राशि इस प्रकार ज्ञात करेंगे :

Total Creditors Account

Dr. | Cr.

			₹				₹
	To Cash A/c		20,100		By Balance b/d		2,050
	To Balance c/d		3,650		By Credit Purchases (Balancing Figure)		21,700
			23,750				**23,750**

3. रोकड़ बही का अन्तिम शेष इस प्रकार ज्ञात करेंगे :

Cash Account

Dr. | Cr.

			₹				₹
	To Balance b/d		4,675		By Creditors		20,100
	To Debtors		30,250		By Drawings		4,000
					By Salaries		2,250
					By Electricity Expenses		400
					By Adevrtising Expenses		600
					By Cartage		300
					By Octroi		350
					By Balance c/d		6,925
			34,925				**34,925**

4. आरंम्भ की पूँजी इस प्रकार ज्ञात करेंगे :

Statement of Affiars as on 1st January ,2010

Creditors		2,050	Cash	4,675
Outstanding Expesnses			Debtors	3,150
Salaries	400		Stock	6,770
Electricity Expenses	200		(As per Trading A/c)	
Advertising Expenses	450	1050		
Opening Capital (Balancing Figure)		11,495		
		14,595		**14,595**

Trading and Profit & Loss Account
for the year ended on 31st December, 2010

Dr. Cr.

		₹		₹
To Opening Stock (Balancing Figure)		6,770	By Sales	31,400
To Purchases		21,700	By Closing Stock	4,000
To Cartage		300		
To Octroi		350		
To Gross Profit ($\frac{25}{125}$ x 31400)		6,280		
		35,400		**35,400**
To Salary	2,250		By Gross Profit	6,280
Add :Outstanding for Current Year	350			
	2,600			
Less : Outstanding for Last Year	400	2,200		
To Electricity Exp.	400			
Add : Outstanding for Current year	250			
	650			
Less : Outstanding for Last Year	200	450		
To Advertising Expenses	600			
Add : Outstanding for Current Year	300			
	900			
Less : Outstanding for Last Year	450	450		
To Net Profit		3,180		
		6,280		**6,280**

Balance Sheet as on 31st December, 2010

		₹		₹
Creditors		3,650	Cash	6,925
Outstanding Expenes :			Debtors	4,300
Salaries	350		Stock	4,000
Electricity Expenses	250			
Advertising Expenses	300	900		
Capital	11,495			
Add : Net Profit	3,180			
	14,675			
Less : Drawings	4,000	10,675		
		15,225		**15,225**

दोहरा लेखा पद्वति तथा अपूर्ण लेखा पद्वति में प्रमुख अन्तर
(Difference between Double Entry System and Incomplete Records System)

(i) नाम (Name): प्रविष्टियों की दृष्टि से दोहरा लेखा पद्वति का नाम सार्थक है जबकि अपूर्ण लेखा पद्वति को ''अपूर्ण'' पद्वति कहना उचित रहेगा।

(ii) प्रयोग (Use) : दोहरा लेखा पद्वति का प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है केवल छोटे व्यापारी ही अपूर्ण लेखा पद्वति काम में लेते है। वस्तुतः इसका प्रयोग वे लोग ही करते है जिनके लिए या तो लेखा पुस्तकें रखना आवश्यक नहीं होता अथवा जिन्हे अपने लेखों के बल पर किसी पत्र के मान्यता प्राप्त करने की आवश्यकता नही होती। अपूर्ण लेख पद्वति कानूनन मान्य नही है।

(iii) प्रविष्टियां (Entries): दोहरा लेखा पद्वति में प्रत्येक व्यवहार की अनिवार्यत : दो प्रविष्टियाँ की जाती है, अपूर्ण लेखा पद्वति में कुछ व्यवहारों की दो प्रविष्टियाँ की जाती है कुछ की एक तथा कुछ व्यवहारों की कोई प्रविष्टि नहीं की जाती ।

(iv) खाते (Account) : दोहरी लेखा पद्वति में व्यक्तिगत, वस्तुगत तथा नाम मात्र के अर्थात् खाताबही में तीनों प्रकार के खाते खोले जाते है जबकि अपूर्ण लेखा पद्वति में खाता बही में केवल व्यक्तिगत खाते ही तैयार किए जाते है। इस पद्वति में वस्तुगत तथा नाम मात्र के खाते खोलने की परम्परा नहीं है।

(v) तलपट (Trial Balance) : दोहरी लेखा पद्वति मे ंखतौनी की जॉच तलपट बनाकर की जा सकती है। अपूर्ण लेखा पद्वति में जब खतौनी ही पूरी नही की जाती है तो तलपट बनाने या मिलने का प्रश्न ही नही उठता ।

(vi) लाभ–हानि का निर्धारण (As certain Profit & Loss) : दोहरी लेखा प्रणाली में किसी व्यापारिक अवधि में लाभ–हानि की गणना प्रविष्टिया द्वारा व्यापारिक लाभ–हानि खाता बनाकर की जा सकती है। अपूर्ण लेखा प्रणाली में लाभ–हानि के निर्धारण के लिए किन्ही दो तिथियों की आर्थिक स्थितियों की तुलना की जाती है। समुचित लेखो के अभाव में यह अनुमान पर अधिक आधारित होता है तथ्यों पर कम।

(vii) आर्थिक स्थिति की जानकारी (Knowledge about financial positon) : दोहरा लेखा प्रणाली में चिट्ठा खाताबही में खुले खातो के शेषो से बनाया जाता है इसलिए इससे सही जानकारी मिलती है। अपूर्ण लेखा प्रणाली में स्थिति–पत्रक स्मरण शक्ति एवं अनुमान के आधार पर तैयार किये जाने से यह चिट्ठे जितना सही नही होता है।

(viii) नियमानुसार लेखा (Recording as per principles) : – दोहरी लेखा प्रणाली के अन्तर्गत पुस्तकें तैयार करते समय परम्परागत निश्चित नियमों का पालन करना पड़ता है। अपूर्ण लेखा प्रणाली के अन्तर्गत व्यापारी की सुविधा तथा इच्छानुसार लेखांकन व्यवस्था बना ली जाती है।

(ix) व्यवसाय का मूल्यांकन (Valuation of business) : दोहरा लेखा प्रणाली से लेंखाकन होने पर सही सूचनायें प्राप्त होती है और व्यापार बेंचना हो तो व्यवसाय का सही–सही मूल्यांकन किया जा सकता है परन्तु अपूर्ण लेखा प्रणाली में यह संभव नहीं है।

(स) प्रमाणिकता (Authenticity) : दोंहरी लेखा प्रणाली के अन्तर्गत तैयार लेखे न्यायालय में प्रमाण स्वरूप मान्य है। परन्तु अपूर्ण लेखा प्रणाली के लेखे मान्य नही है।

स्वयं जॉचिये– 1

सही उत्तर कोष्ठक में लिखिये ।

1. अपूर्ण अभिलेखन विधि के अन्तर्गत पुस्त–पालन :

(अ) वैज्ञानिक है। (ब) अवैज्ञानिक है।
(स) अव्यवस्थित (द) दौनो (ब) और (स) है। ( )

2. आरम्भिक पूॅजी का निर्धारण खाता बना कर होता है :

(अ) कुल देनदार खाता (ब) कुल लेनदार खात
(स) रोकड़ खाता (द) आरम्भिक स्थिति विवरण ( )

3 वर्ष के दौरान उधार क्रय की गणना किस खाते को बना कर की जाती है :

(अ) कुल देनदार खाता (ब) कुल लेनदार खाता
(स) रोकड़ खाता (द) आरम्भिक स्थिति विवरण ( )

4. यदि आरम्भिक पूॅजी 60,000 रू, आहरण 5,000 ₹ वर्ष में लगाई अतिरिक्त पूॅजी 10,000 ₹, अन्तिम पूॅजी 90,000 है तो वर्ष के दौरान कमाया गया लाभ होगाः

(अ) 20,000 ₹ (ब) 25,000 ₹
(स) 30,000 ₹ (द) 40,000 ₹ ( )

स्वयं जॉचिये–2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

(1) उधार विक्रय की गणना .... खाते को बनाकर की जाती है।

(2). .... पर .... की अधिकता किसी समयावधि में होने वाले लाभ को बताती है ।

(3). .... ज्ञात करने के लिए अंतिम पूँजी में .... को घटाकर व .... को जोड़ा जाता है।

(4). अपूर्ण खाता का प्रयोग .... द्वारा किया जाता है।

सारांश

अपूर्ण लेखा प्रणाली से तात्पर्य लेखो की ऐसी प्रणाली से है जो पूर्णरूप से दोहरा लेखा प्रणाली पर आधारित नहीं होती । इस प्रणाली में व्यापारी कुछ व्यवहारों का पूर्ण लेखा, कुछ व्यवहारों का एक पक्षीय लेखा तथा कुछ व्यवहारों का बिल्कुल भी लेखा नहीं रखता हैं इसलिये इसे अपूर्ण लेखा प्रणाली कहते है। इसमें केवल व्यक्तिगत खाते ही रखे जाते है। वस्तुगत एवं नाम–मात्र के खाते नहीं खोले जाते। यह छोटे व्यापारी जैसे – एक दूध बेचने वाला, पान बेचने वाला, खोमचे वाला, सब्जी बेचने वाले व्यापारीयों के द्वारा इसे अपनाया जाता है। स्थिति–पत्रक में कुछ सूचनाऐं तो हिसाब की पुस्तको से ली जाती है तथा अन्य सूचनाऐं व्यापारी के अनुमान पर निर्भर करती है। जबकि स्थिति–विवरण व्यापारी की बहियो में खोले गए विभिन्न खातो के शेषो से तैयार किया जाता है। यह दोहरी प्रविष्टि प्रणाली से बनाये जाने के कारण किसी मद के छूटने की संम्भावना नही रहती है।

अपूर्ण लेखों में व्यापारी प्रारम्भिक सूचनाओं से स्थिति–पत्रक बनाकर प्रारम्भिक पूँजी ज्ञात कर लेता है तथा अन्तिम सूचनाओं की सहायता से स्थिति–पत्रक बनाकर '' अन्तिम पूँजी'' ज्ञात कर लेता है। इसके पश्चात् वह अन्तिम पूॅजी में आहरण जोड़कर वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूॅजी को घटा देता है। यह व्यापारी की समायोजित अन्तिम पूॅजी कहलाती है इसमें से प्रारम्भिक पूॅजी को घटाकर लाभ–हानि ज्ञात कर लेता है जबकि दोहरा लेखा प्रणाली में अंतिम खाते बनाकर ज्ञात कर लेगें ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. अपूर्ण लेखाविधि किसके द्वारा प्रयुक्त नही की जा सकती है :

(अ) एकल स्वामित्व का व्यापार (ब) सझेदारी संस्था

(स) संयुक्त पूॅजी कम्पनी (द) उपरोक्त सभी ( )

2. अपूर्ण लेखा विधि में लाभ की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है :

(अ) प्रारम्भ में पूॅजी + आहरण – अतिरिक्त पूॅजी – अन्त में पूॅजी

(ब) अन्त में पूॅजी + आहरण + अतिरिक्त पूॅजी – प्रारम्भ में पूॅजी

(स) अन्त में पूॅजी + आहरण – अतिरिक्त पूॅजी– प्रारम्भ में पूॅजी

(द) प्रारम्भ में पूॅजी – आहरण + अतिरिक्त पूॅजी – अन्त में पूॅजी ( )

3. अपूर्ण लेखाविधि दोषपूर्ण है क्योकि इस प्रणाली के अन्तर्गत –

(अ) तलपट को तैयार नही किया जा सकता है।

(ब) व्यापार एवं लाभ–हानि खाते तैयार नही किये जा सकते है।

(स) चिट्ठा तैयार नही किया जा सकता है।

(द) उपरोक्त सभी ( )

4. बिक्री + अन्तिम स्टॉक – क्रय – सकल लाभ का अन्तर होगा। :

(अ) क्रय वापसी (ब) विक्रय वापसी

(स) बेचे गये माल की लागत (द) प्रारम्भिक स्टॉक ( )

5. प्राप्य विपत्र, जो भुगतान के लिए अस्वीकृत हो गये है, किस खाते को नाम किये जाते है?

(अ) देनदारो का खाता (ब) प्राप्य विपत्र का खाता

(स) लेनदारो का खाता (द) रोकड़ खाता ( )

6 वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी 2,000 ₹, वर्ष के अन्त में पूँजी 3,600 ₹ तथा वर्ष में आहरण 400 ₹ के है तो लाभ की राशि होगी :

(अ) 1,200 ₹ (ब) 1,600 ₹

(स) 2,000 ₹ (द) इनमें से कोई नही। ( )

7. यदि बेचे गये माल की लागत 26,000 रू, प्रारम्भिक स्टॉक 2,400 ₹ तथा अन्तिम स्टॉक 1,600 ₹ है तो क्रय की धनराशि क्या है।

(अ) 22,000 ₹ (ब) 25,200 ₹

(स) 26,800 ₹ (द) इनमें से कोई नही। ( )

8. किसी व्यापार के स्वामी की सम्पतियॉ 8,500 रू तथा दायित्व 2,100 रू है तो उसकी पूँजी की धनराशि होगी –

(अ) 10,600 ₹ (ब) 6,400 ₹

(स) 8,500 ₹ (द) इनमें से कोई नही। ( )

9. यदि प्रारम्भिक देनदार 4,8000 रू, अन्तिम देनदार 60,000 रू देनदारो से प्राप्त धनराशि 1,00,000 ₹ है तो उधार विक्रय की धनराशि होगी –

(अ) 88,000 ₹ (ब) 1,12,000 ₹

(स) 8,000 ₹ (द) 56,000 ₹ ( )

10. यदि अन्तिम प्राप्य विपत्रो की धनराशि 24,000 ₹, वर्ष के दौरान प्राप्य विपत्रों से प्राप्त नकद धनराशि 40,000 रू तथा वर्ष के दौरान देनदारों से प्राप्त प्राप्य विपत्र 56,000 ₹ तो प्रारम्भिक प्राप्य विपत्रो की धनराशि होगी –

(अ) 1,20,000 ₹ (ब) 40,000 ₹

(स) 8,000 ₹ (द) इनमें से कोई नही। ( )

11. यदि सकल लाभ की दर लागत पर 25 प्रतिशत है तथा बिक्री की धनराशि 6,00,000 ₹ है तो बेचे गये माल की लागत होगी –

(अ) 4,50,000 ₹ (ब) 4,00,000 ₹

(स) 4,80,000 ₹ (द) इनमें से कोई नही। ( )

अतिलघुउत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Question)

01 अपूर्ण लेखा विधि की कोई दो विशेषताएँ बताइये।

02 अपूर्ण लेखों की अपूर्णता के काइ दो कारण दीजिये।

03 अपूर्ण लेखों के कोई दो दोष बताइये।

04 स्थिति विवरण एवं चिट्ठे में अन्तर बताइये।

05 रेखा अपनी लेखा पुस्तकें अपूर्ण लेखा विधि पर रखती है। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर, 2010 को उसकी पूँजी 24,000 ₹ थी तथा उसके वर्ष में उसके आहरण 5,500 ₹ थे। वर्ष के दौरान 2,500 ₹ की हानि हुई। वर्ष के प्रारम्भ में रेखा की पूँजी ज्ञात कीजिए।

(उत्तर : 32,000 ₹)

06 पिंकी अपने व्यवहारों के लिए अपूर्ण लेखे रखती हे। 1 अप्रेल 2009 को उसके देनदार 12,500 ₹ स्टॉक 5,000 ₹, बैंक ओवरड्राफ्ट 4,000 ₹, लेनदार 2,500 ₹ एवं फर्नीचर 5,000 ₹ का था। 31 मार्च, 2010 को उसके देनदार 16,000 ₹,

स्टॉक 4,000 ₹, बैंक शेष 2,500 ₹ एवं लेनदार 5,000 ₹ थे। उसका वर्ष 2009 – 2010 का अर्जित लाभ–हानि ज्ञात कीजिए।

(उत्तर : 6,500 ₹ लाभ)

07 शिव की पूँजी 1 अप्रेल, 2009 को 25,000 रू तथा 31 मार्च 2010 को 29,000 ₹ थी वर्ष के दौरान उसने 10,000 ₹ की अतिरिक्त पूँजी लगाई तथा 3,000 ₹ के आहरण किये। उसे फर्नीचर को बेचने से 2,500 ₹ का लाभ हुआ। उसके वर्ष 2009–2010 के अर्जित व्यापारिक लाभ–हानि ज्ञात कीजिए।

(उत्तर : 5,500 ₹)

08 निम्नलिखित सुचनाओं से उधार क्रय की राशि ज्ञात कीजिए:– लेनदारों का प्रारम्भिक शेष 4,000 रू तथा अन्तिम शेष 3,500 रू। वर्ष के दौरान लेनदारो को भुगतान की गई राशि 2,000 रू एवं स्वीकृत देय विपत्र 3,000 ₹ थे। वर्ष के दौरान 1,000 रू के प्राप्य विपत्रो का बेचान भी लेनदारो को किया गया था।

(उत्तर : 5,500 ₹ हानि)

09 निम्नलिखित विवरणों से कुल विक्रय की राशि ज्ञात कीजिए :–

देनदारों का प्रारम्भिक शेष 3,500 ₹ तथा अन्तिम शेष 5,000 रू, देनदारो से प्राप्त रोकड़ 6,500 ₹, देनदारो को बट्टा दिया 300 ₹, डूबत ऋण 200 रू, डूबा हुआ ऋण प्राप्त हुआ 100 ₹ तथा रोकड़ बिक्री 1,500 ₹।

(उत्तर : 10,000 ₹)

10 एक व्यापारी के वर्ष के प्रारम्भ में प्राप्य बिल खाते का शेष 30,000 ₹ था। देनदारों से प्राप्त बिल 70,000 ₹ थे। वर्ष में प्राप्य बिलो से प्राप्त राशि 60,000 ₹ थी, 10,000 ₹ के प्राप्य बिलों का लेनदारों को बेचान किया गया। वर्ष के अन्त में प्राप्य बिल खाते का शेष क्या होगा?

(उत्तर : 30,000 ₹)

11 निकिता के व्यवसाय से सम्बन्धित निम्नलिखित सूचना उपलब्ध है –

1 अप्रेल, 2009 को देय विपत्र खाते का शेष 16,000 रू तथा 31 मार्च 2010 को देय विपत्र खाते का शेष 30,000 ₹ था। वर्ष 2009–2010 में देय विपत्रों का भुगतान किया 36,000 रू तथा देय विपत्र वपास लौटाये गये 6,000 रू। वर्ष के दौरान निर्गमित देय–विपत्रो की राशि ज्ञात कीजिए।

(उत्तर : 56,000 ₹)

12 दीपिका की पुस्तके निम्नलिखित सूचनाऐं प्रकट करती है –

क्रय 40,000 ₹, विक्रय 65,000 ₹ ,अन्तिम स्टॉक 10,000 ₹। यदि उसका सकल लाभ लागत पर 30 प्रतिशत हो तो उसके प्रारम्भिक स्टॉक की राशि की गणना कीजिए।

(उत्तर : 20,000 ₹)

13 एक व्यापारी अपर्ण लेखे रखता है। वर्ष के दौरान उसका क्रय 40,000 ₹ विक्रय 30,000 ₹, तथा प्रारम्भिक स्टॉक 5,000 ₹ था । वर्ष के दौरान सकल हानि 7,500 ₹ हो तो अन्तिम स्टॉक की राशि ज्ञात कीजिए।

(उत्तर : 7,500 ₹)

लघुउत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer type Question)

01 दोहरा लेखा विधि एवं अपूर्ण लेखा विधि में चार अन्तर बताइये।

02 अपूर्ण लेखो विधि के कोइ चार दोष बताइए।

03 वर्ष के प्रारम्भ की पूँजी अपूर्ण लेखों की स्थिति में कैसे ज्ञात की जाती है? एक काल्पनिक उदाहरण देकर समझाइये।

04 निम्नलिखित सुचनाओं से कुल बिक्री की राशि ज्ञात कीजिए :– देनदारों का प्रारम्भिक शेष 30,000 ₹, देनदारों का अन्तिम शेष 40,000 ₹, देनदारो से प्राप्त नकद राशि 42,500 ₹, प्राप्त प्राप्य बिल 7,500 ₹ प्राप्य विपत्र का बेचान 2,500 ₹, देनदारो को दिया गया बट्टा 2,000 रू, डूबत ऋण 1,000 ₹,एवं डूबत ऋण आयोजन 500 ₹, नकद बिक्री 12,500 ₹।

(उत्तर : 75,500 ₹)

05 निम्नलिखित से उधार क्रय की राशि ज्ञात कीजिए :–
लेनदारों का प्रारम्भिक शेष 12,500 ₹, लेनदारों का अन्तिम शेष 16,000 ₹, क्रय वापसी 2,500 ₹, स्वीकृत देय विपत्र 10,000 ₹, चुकाई गई नकद राशि 25,000 ₹, देय विपत्र वापस लिया। 1,000 रू।
(उत्तर : 40,000 ₹)

06 निम्नलिखित विवरणों से वर्ष में देनदारों से प्राप्त प्राप्य विपत्रों की राशि ज्ञात कीजिए–
प्राप्य विपत्र का प्रारम्भिक शेष 2,120 ₹, प्राप्य विपत्रो के बदले प्राप्त राशि 2,460 ₹, बिल भुनाने पर बट्टा 20 रू, वर्ष के दौरान भुनाये गये बिल 200 रू, प्राप्य विपत्र का अन्तिम शेष 1,680 ₹ एव अनाद्रत प्राप्य विपत्र 100 रू।
(उत्तर : 2,340 ₹)

07 अज्ञात अंक का परिकलन कीजिएः–

वर्ष के प्रारम्भ में पूँजी	18,000
वर्ष के दौरान अर्जित लाभ	7,200
वर्ष के अन्त में पूँजी	31,200
आहरण या अतिरिक्त पूँजी	?

(उत्तर : 6,000 ₹)

08 राहुल अपनें व्यापार में अपूर्ण लेखे रखता है। उसके व्यापार की स्थिति निम्नलिखित थी :–

	1.1.2009 ₹	31.12.2010 ₹
Cash in Hand	2,000	4,000
Cash at Bank	4,000 (Dr.)	5,000(Cr.)
Debtors	7,500	13,000
Stock	10,000	15,000
Plant & Machinery	30,000	30,000
Creditors	3,500	2,000

उसने व्यापार से 10,000 ₹ निकाले जिसमे से 5,000 ₹ व्यापार के लिए फर्नीचर खरीदने में व्यय किये। वह 4,000 ₹ की अतिरिक्त पूँजी भी लाया। उक्त सुचनाओं से वर्ष का लाभ–हानि ज्ञात कीजिए।
(उत्तर : 11,000 ₹ लाभ)

09 प्रेम अपने व्यवहारों के लिए अपूर्ण लेखे रखता है। निम्नलिखित सुचनाओं से वर्ष 2010 के लिए उसके प्रारम्भिक स्टॉक की राशि ज्ञात कीजिएः–

नकद क्रय	40,000 रू	उधार क्रय	1,60,000 ₹	नकद विक्रय	1,40,000 ₹
उधार विक्रय	40,000 ₹	अन्तिम स्टॉक	50,000 ₹		

लगत मूल्य पर हानि 25 प्रतिशत।
(उत्तर : 90,000 ₹)

10 निम्नलिखित सुचनाओं के आधार पर लेनदारों की अन्तिम राशि ज्ञात कीजिए :–

कुल क्रय	50,000 रू	नकद क्रय	10,000 ₹	लेनदारो को भुगतान	30,000
बट्टा प्राप्त किया	3,000 ₹	लेनदारो का प्रारम्भिक शेष	12,000 रू		

(उत्तर : 19,000 ₹)

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay type Question)

01 अपूर्ण लेखा विधि से आप क्या समझते है? यह दोहरा लेखा विधि से किस प्रकार भिन्न है?
02 अपूर्ण लेखा विधि के अपूर्णता के कारण बताते हुए इस विधि के दोष लिखिए ।
03 उस प्रक्रिया को समझाइये जो अपूर्ण लेखो से अन्तिम खाते बनाते समय अपनाई जाती है।

आंकिक प्रश्न (Numerical Question)

01 कपिल ने 1 जनवरी 2010 को 25,000 ₹ की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। उसने तुरन्त 6,000 ₹ का फर्नीचर खरीदा। वर्ष के दौरान उसने अपनी पत्नी से 15,000 ₹ का ऋण लिया तथा 9,500 रू की अतिरिक्त पूँजी लगायी। उसने पारिवारिक खर्चो के लिए प्रत्येक माह के अन्त में 900 ₹ का आहरण किया। 31 दिसम्बर 2010 को उसकी स्थिति निम्नलिखित प्रकार से थी–

Kapil commenced business on 1st January,2010 with a capital of ₹ 25,000. He immediately bought furniture for ₹ 6,000 During the year he borrowed ₹ 15,000 from his wife and introduced a further capital of his own amounting to ₹9,500 He had withdrawn ₹ 900 at the end of each month for family expenses. On 31st December,2010 his position was as follows :

Cash in hand ₹ 600, Cash at Bank ₹ 7,800, Sundry debtors ₹ 14,400, Stcok ₹ 20,400, B.R. ₹ 4,800, Creditors ₹ 1500 and Rent due ₹ 450.

फर्नीचर पर 10 प्रतिशत ह्रास लगाना है। वर्ष 2010 में कपिल द्वारा अर्जित लाभ अथवा हानि की गणना कीजिए।

(furniture to be depreciated by 10% Ascertain the Profit or Loss earned by Kapil during the year 2010)

(Ans. Capital at the end ₹ 36,450 and Profit ₹ 12,750)

02 निम्नलिखित तथ्यों की सहायता से आप कुल क्रय की राशि ज्ञात करो।

(From the following facts, you are required to calculate total purchases)

	₹
Opening Balance of Bills Payable	5,000
Opening Balance of Creditors	6,000
Closing Balance of Bills Payable	7,000
Closing Balance of Creditors	4,000
Cash Purchase	25,800
Cash paid to Creditors during the year	30,200
Bill Payable discharged during the year	8,900
Returns outwards	1,200

(Ans : B.P. accepted ₹ 10,900, Credit Purchases ₹ 40,300 and total Purchases ₹ 66,100)

03 लक्ष्मण ने 10 लाख ₹ की पूँजी से 1 अप्रेल 2010 को एक कपड़े के व्यापारी के रूप में व्यापार प्रारम्भ किया। उसी दिन उन्होने 3 लाख ₹ का फर्नीचर खरीदा। वह अपने लेखे इकहरी लेखा प्रणाली के अनुसार रखता है। 31 मार्च 2011 को समाप्त होने वाले वर्ष के व्यवहारो का विवरण निम्नलिखित है–

On 1st April 2010, Laxman commenced his business as a cloth merchant with a capital of ₹ 10,00,000. On the same day he purchased furniture for ₹ 3,00,000. He kept his books of accounts according to the single entry system. Following are the particulars of transactions during the year ened 31st March 2011

	₹
Slaes (Including cash Sales ₹ 7,00,000	17,00,000
Purchase (Including Cash Purchases ₹ 4,00,000)	15,00,000
Sundry Exp. Paid in Cash	70,000
Bad Debts	5,000
Drawings by Laxman in Cash	1,20,000
Salaries Paid in Cash	2,45,000

लक्ष्मण ने अपनी दुकान से 5,000 ₹ का कपड़ा व्यक्तिगत प्रयोग के लिये तथा फर्म की रोकड़ में से 20,000 ₹ अपने पुत्र को दिये परन्तु इन व्यवहारो का लेखा बहियों में नही हुआ।

31 मार्च 2011 को उसके देनदार 5,65,000 ₹, लेनदार 3,60,000 ₹ तथा रहतिया 6,50,000 ₹ का था।

संशोधित रोकड़ बही, देनदार खाता, लेनदार खाता, दर्शाते हुए 31 मार्च 2011 को समाप्त होने वाले वर्ष का व्यापारिक , लाभ–हानि खाता तथा इसी तिथि का चिट्ठा बनाइये।

Laxman took cloth worth ₹ 5,000 from his shop for his personal use and gave ₹ 20,000 to his on out of firm's cash but these transactions were not recorded in the books of accounts.

On 31st March 2011 his Debtors were ₹ 5,65,000] creditors were ₹ 3,60,000 and stock was ₹ 6,50,000

Show rectified cash book, Debtors Account, Creditors Account and prepare Trading and Profit and Loss Account for the year ended 31st March,2011 and Balance sheet as on that date.

(Ans : Cash received from debtors ₹ 4,30,000, Cash paid to Creditors ₹ 7,40,000, Closing Cash Balance ₹ 2,35,000, Gross Profit ₹ 8,55,000, Net Profit ₹ 5,35,000 and Total of Balance sheet ₹ 17,50,000)

04 हेमन्त का एक छोटा व्यापार है जिसके लिए निम्नलिखित कार्यप्रणाली अपनायी जाती है : Hemant has a small business for which the following procedures are followed :

(1) समस्त प्राप्त राशि प्रतिदिन बैक में जमा होगी।
(All collections are deposited with the bank each day)

(2) फुटकर व्ययो के अतिरिक्त समस्त भुगतान चैक से होगें।
(All Payment except petty expenses are made by cheque)

(3) फुटकर व्ययो के लिए प्रत्येक माह के प्रथम दिन 500 ₹ के चैक से राशि निकाली जायेगी।
(To meet petty expenses, a cheque of ₹500 is withdrawn from the bank on the 1st by of each month)

(4) हेमन्त अपना व्यक्तिगत आहरण बैंक से करेगा।
(Hemant makes personal drawings from the bank)

(5) सम्पत्तियों और दायित्व निम्नलिखित थे –
(The Assets and Liabilities are us under)

	On 01.01.2010	On 31.12.2010
	₹	₹
Cash in Hand	320	200
Cash at Bank / (Od)	2,500	(5,000)
Debtors	20,000	30,000
Creditors	20,000	30,000
Stock	10,000	30,000

चालू वर्ष में लेनदारों को 20,000 ₹ चुकाये। वर्ष में 30,000 ₹ की बिक्री हुई। हेमन्त ने कार्यालय की रोकड़ में से 200 ₹ के व्यक्तिगत खर्चे किये। अन्तिम खाते बनाइये।

(Payment to creditors during the year ₹ 20,000] Sales made during the year ₹ 30,000. Hemant spent ₹ 200 from the office cash for his personal expenses. Prepare final accounts)

(Ans ₹ Capital in the beginning ₹ 12,820, credit purchase ₹30,000, Received from debtors ₹ 20,000, sundry expenses paid ₹ 5,920, Hemant drawings from bank ₹ 1,500, Gross Profit ₹ 20,000, Net Profit ₹ 14,080 and total of Balance Sheet ₹ 60,200)

5 दीपक ने बतलाया कि 31 मार्च 2010 को उसकी पूँजी 1,30,400 ₹ है, जबकि 1 अप्रेल 2009 को पूँजी 81,600 ₹ थी। वर्ष के दौरान उसने अपने रिश्तेदार को निजी खाते पर 20,000 ₹ का ऋण दिया तथा 1,000 ₹ प्रतिमाह स्वयं की जीवन बीमा प्रीमियम का भुगतान किया। वह अपने चिकित्सा व्यय एवं भोजनालय व्यय के 14,000 ₹ भी व्यापार में से चुकाता है। उसने अपनी निजी कार लागत मूल्य 60,000 ₹ को 10,000 ₹ प्रीमियम पर बेचकर इस राशि को व्यवसाय में ही विनियोजित कर दिया। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी सूचना उपलब्ध नहीं है। आपको लाभ प्रदर्शित करते हुए एक विवरण बनाना है।
(उत्तर : वर्ष का शुद्व लाभ 24,800)

6 राम ने 1 अप्रेल, 2009 को 80,000 ₹ नकद एवं 40,000 ₹ का माल लगाकर व्यापार प्रारम्भ किया। 31 मार्च 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष में उसने अपने एक मित्र से 30,000 ₹ का ऋण लिया। उसने अपने 20,000 ₹ के निजी 10 प्रतिशत भारत सरकार ब्राण्ड को 5 प्रतिशत प्रीमियम पर विक्रय करके प्राप्त धनराशि को व्यापार में विनियोजित कर दिया। उसने वर्ष के दौरान 20,000 ₹ का आहरण कर उसमें से 10,000 ₹ का फर्नीचर व्यापार के लिए क्रय किया। 31 मार्च 2010 को उनकी स्थिति इस प्रकार थी– रोकड़ी 24,000 ₹, बैक में जमा 32,000 ₹, देनदार 24,000 ₹, प्राप्य विपत्र 30,000 ₹, स्टॉक 60,000 ₹, लेनदार 16,000 ₹ तथा देय विपत्र 6,000 ₹ के थे। फर्नीचर पर 10 प्रतिशत ह्रास देनदारो पर 5 प्रतिशत डूबत ऋण का आयोजन एवं पूँजी पर 5 प्रतिशत ब्याज का प्रावधान करना है। 31 मार्च 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ अथवा हानि ज्ञात कीजिए।
(उत्तर : वर्ष का शुद्व हानि 11,200)

7 प्रियंका एंकाकी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर पुस्तके तैयार करती है। वह आपको निम्नलिखित सूचनाऐ प्रदान करती है–

(Priyanka maintains books on single entry system. She given you the following information)

Capital as on 1st January, 2010	15,200
Capital as on 31st December,2010	16,900
Drawings made during the year 2010	4,800
Capital introduced on 1st August,2010	2,000

आप प्रियंका द्वारा अर्जित लाभ या हानि की गणना कीजिये।
(You are required to calculated profit & Loss earned by Priyanka)
(Ans ₹ Profit ₹ 4,500)

8 एक व्यापारी जिसने अपने हिसाब–किताब की पूर्ण पुस्तकें नहीं रखी है आपसे 31 दिसम्बर, 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष के अपने अन्तिम खाते तैयार करवाना चाहता है। आपको निम्नलिखित सूचनॉए प्रदान की जाती है –
रोकड़ बही का सारांश
1 जनवरी 2010 को रोकड़ का शेष 5,170 ₹, प्राप्तिया (देंनदारो से प्राप्त) 42,050 ₹ आहरण 3,000 ₹, लेनदारो को भुगतान 32,400 ₹, वेतन 2,500 ₹, किराया 1,200 ₹ बिजली व्यय 350 ₹, विज्ञापन 450 ₹, छपाई एवं लेखन 250 रू।
उसकी अन्य सम्पत्तियां और दायित्व निम्नलिखित है :–

	31 दिसम्बर, 2009	31 दिसम्बर, 2010
देनदार	3,350	5,100
लेनदार	1,400	3,500
अदत्त किराया	100	100
अदत्त बिजली व्यय	20	15
अदत्त विज्ञापन व्यय	–	250

31 दिसम्बर, 2010 को रहतिये का मूल्यांकन 4,500 ₹ था परन्तु व्यापारी के पास 31 दिसम्बर, 2009 के रहतिये का कोई विवरण नही है। वह आपको सूचित करता है कि वह अपने माल को लागत + 33 1/3 प्रतिशत लाभ पर बेचता है। 31 दिसम्बर, 2010 को उसका व्यापारिक तथा लाभ–हानि खाता तथा उसी तिथि का स्थिति विवरण तैयार कीजिए।
A trader, who has not kept a complete set of books, asks you to prepare his final accounts for the year ended 31st December,2010 you are, however, able to obtain the following informations:
Sumary of Cash Book:
Balance of Cash on 1st January,2010 ₹ 5,170, Taking (Received from Debtors) ₹ 42,050, Drawing ₹ 3,000, Payament to creditors ₹ 32,400, salaries ₹ 2,500, Rent ₹ 1,200, electricity charges ₹ 350, advertising ₹ 450, printing and Stationary ₹ 250

His other Assets & Liabilities are:

	31 November 2009	31 December 2010
Debtors	3,350	5,100
Creditors	1,400	3,500
Outstanding Rent	100	100
Outstanding Electricity Charges	20	15
Outstanding Advertisment	-	250

The stock on 31st December,2010 was valued at ₹4,500 but the trader has no record of the stock on 31st December,2009. He informs you, however, that he invariably sells his goods a cost plus 33 1/3 % Prepare his trading and Profit & Loss account for the year ended 31st December,2010 and his Balance Sheet as on that date.
(Ans. Clossing loss balance 7,070 credit purchases 34,500 , credit sales 43,800, G.P. 10,950, N.P. 5,955 opening stock 2850)
(Ans. Opening capital 9850 Total B.S. 16,670)

9 मैसर्स सरजीवन होजरी, लुधियाना के पास सिर्फ एक बैंकपास बुक के सिवाय अन्य कोई पुस्तक नहीं है। निम्नाकित सूचनाओं के आधार पर 31 मार्च 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उनके अन्तिम खाते बनाइए पास बुक के विश्लेषणो से पता चलता है। 74,100 ₹ देनदारो से आए और बैंक में जमा किए, आहरण 6,000 ₹ लेनदारो को भुगतान 40,800 ₹, वेतन 3,000 ₹ विज्ञापन व्यय 900 ₹, विविध व्यापारिक खर्चे 3,600 ₹, दान 2,400 ₹ आयकर 600 ₹, भवन 20,000 ₹ और 31.03.2010 को बैंक शेष 5,000 ₹

अन्य सम्पत्तिया और दायित्व निम्नलिखित प्रकार थे। :–

	01.04.2009 को ₹	31.03.2010 को ₹
लेनदार	4,800	7,000
अदत्त विज्ञापन व्यय	–	5,000
अदत्त वेतन	400	500
देनदार	–	10,200

31.03.2010 को स्टॉक का अनुमानित मूल्य 7,000 ₹ है। परन्तु 31.03.2009 को स्टॉक के बारे में कोई सुचना नहीं है। व्यापारी विक्रय पर 25 प्रतिशत लाभ लेता है। जरूरी नोट दे कि आप अपरिचित सूचनाओं पर कैसे पहूंचे ?

M/s. Sarjeewan Hosiery, Ludiyana have only a Bank Pass book and does not keep any other books of account. From the following information prepare their Final Accounts for the year ended 31st March, 2010.
An analysis of the pass book shows :
Total amount received from debtors and deposited with the bank ₹ 74,100, Drawing ₹ 6,000, Payment to Creditors ₹ 40,800, Salaries ₹ 3,000, Advertisment expenses ₹ 900, Sundry Trade Expenses ₹ 3,600, Charity ₹ 2,400, Income tax ₹ 600, Building ₹ 20,000 and Balance at Bank 31.03.2010 ₹ 5,000.

Other assets and Liabilities were as under :

	As on 01.04.2009 ₹	As on 31.03.2010 ₹
Creditors	4,800	7,000
Advertisment Expenses Outstanding	-	500
Salaries Outstanding	400	500
Debtors	-	10,200

The estimated value of stock-in-trade on 31.03.2010 is ₹ 7,000, but no information is available regarding the stock-in-trade on 31.03.2009. The trader takes 25% Profit on Sales. Give important notes to show how you have arrived at the unknown figures.
(Ans. Credit Sales 84,300 , credit pur 43,000 cash in hand at the end 11,800 opening stock 27,225 cap. at the beginning 42,025 G.P. 21,075 N.P. 5475 , B.S. 54,000)

10 श्री राम प्रसाद शर्मा अपूर्ण अभिलेख रखते है। उनकी पुस्तको से निम्नलिखित विवरण लिए गए है।
Shri Ram Prasad Sharma keeps incomplete records following particular have been taken from his books.

	1st April 2009 ₹	31st March 2010 ₹
Bill Recivable	15,400	8,000
Bills Payable	12,000	26,000
Total Debtors	24,000	32,500
Total Creditors	18,000	24,600

अन्य सूचनाएँ Further Informations

देनदारो से 98000 ₹ प्राप्त रोकड़ (गोपाल से प्राप्त 1,600 ₹) सहित जो उससे लेने थे परन्तु पिछले वर्ष डुबत ऋण के रूप में अपलिखित कर दिये गये थे। 98,000
Cash received from Debtors 98000 ₹ (including a sum of ₹ 1,600 from Gopal being the amount due from him but written of as Bad-Debts last year)

Cash Sales	75,000
Cash Paid to Creditors	56,400
Bad-Debts Written off	2,000
Cash Purchases	30,000
Cash Received against Bill Receivable	22,700
Discount allowed to Customer	3,100
Return Outwards	2,500
Discount Received from suppliers	1,800
Returns Inwards	4,000

Payment made against B/P	30,800
Bills receivable endorsed to Creditors	6,000

निम्नलिखित की गणना करते हुए अंतिम खाते बनाइये। (Prepare final account by calculating the following :)

(1) कुल विक्रय Total Sales .
(2) कुल क्रय Total Purchases

(Ans.- B.R. Accepted by Des ₹ 21,300 , Cr. Sale ₹ 1,35,300 , B.P. Accepted ₹ 44,800 Cr. Purchase ₹ 1,18,100 Cash Balance at the end ₹ 78,500, G.P. ₹ 60,700, Net Profit ₹ 59,000, opening Capital ₹ 9400 and total of Balance Sheet ₹ 1,19,000)

उत्तर

स्वयं जांचिये – 1

(1) (ब) (2) (द) (3) (ब) (4) (ब)

स्वयं जांचिये – 2

1	कुल देनदार	2	आंरभिक पूंजी, अन्तिम पूंजी
3	लाभ, अतिरिक्त पूंजी, आहरण	4	लघु व्यापारी

बहुचयनात्मक प्र□न

(1) (स) (2) (स) (3) (द) (4) (द) (5) (अ) (6) (स) (7) (ब) (8) (ब)
(9) (ब) (10) (स) (11) (स)